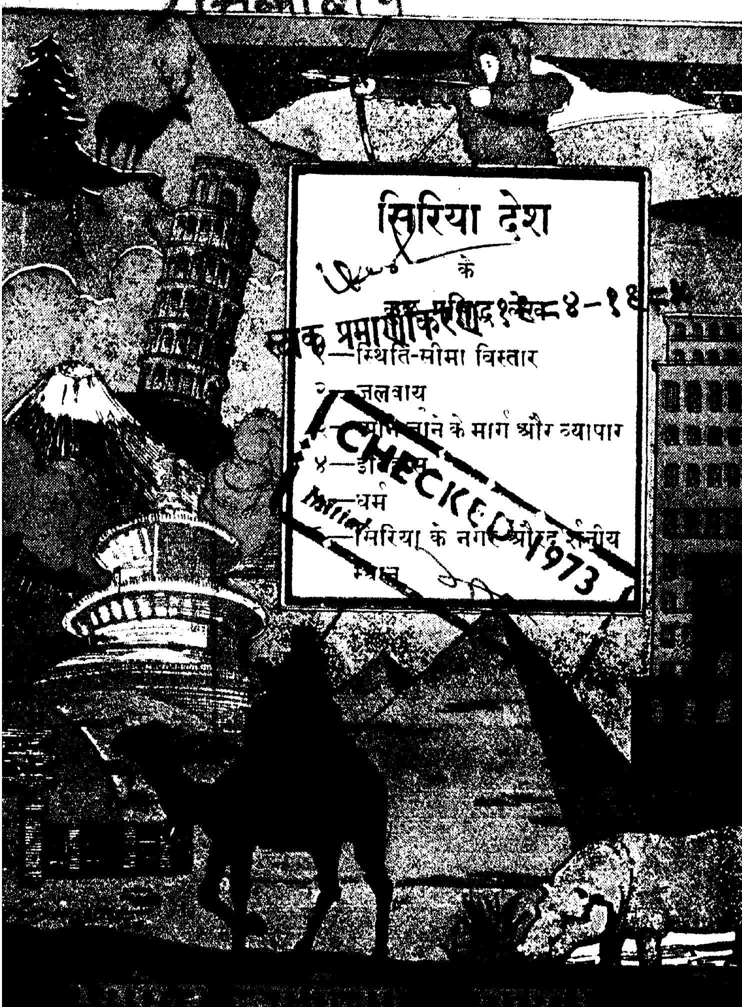
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—३७



सिरिया देश

के

१—स्थिति-सीमा विस्तार

२—जलवायु

३—आने जाने के मार्ग और व्यापार

४—इतिहास

५—धर्म

६—सिरिया के नगर और दर्शनीय स्थान

सितम्बर १९४२] # देश-दर्शन [भाद्रपद १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४]

सिरिया

संख्या ३
पूर्ण संख्या ३७

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

१८२५८
२८.८.

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

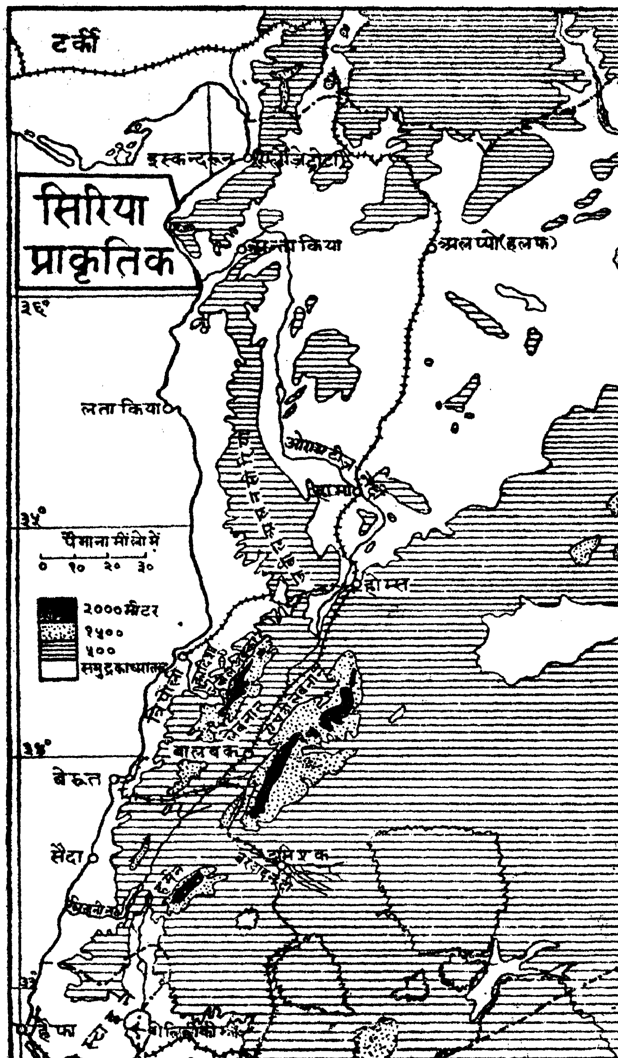
वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

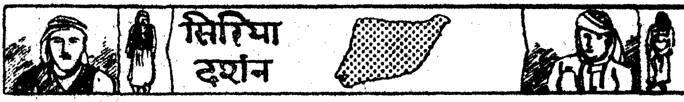
विषय-सूची

स्थिति

स्थिति-सीमा विस्तार

सिरिया निवासी अपने देश को शाम कहते हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि सिरिया देश प्राचीन एसीरिया से बिगड़ कर बना है। लेकिन यह छोटा देश १९२० ई० से अधिक प्रसिद्ध हो गया जब फ्रांस को इस देश पर राज्य करने के लिये राष्ट्रसंघ की ओर से आदेश मिल गया। सिरिया देश उत्तर में टर्की, पश्चिम में भूमध्यसागर, दक्षिण में पेलेस्टाइन और ट्रान्सजार्डन से घिरा है। सिरिया के दक्षिण-पूर्व में अरब और उत्तर-पूर्व में इराक का रेगिस्तान है। उत्तर की ओर अमानस और टारस पर्वत और भूमध्यसागर सिरिया की प्राकृतिक सीमा बनाते हैं। लेकिन दक्षिण और पूर्व की ओर कोई स्पष्ट प्राकृतिक सीमा नहीं है। इस ओर का रेगिस्तान सिरिया, इराक और अरब में समान रूप से फैला हुआ है। सिरिया के साथ लेबनान देश भी सम्मिलित है। सिरिया की राजधानी दमश्क और लेबनान की राजधानी बेरूत है। उत्तर से दक्षिण तक


टर्की
सिरिया
प्राकृतिक
लताकिया
होम्स
पैमाना मीलों में
० १० २० ३०
२००० मीटर
१५००
५००
बालबक
बेरूत
सैदा
दमिश्क



सिरिया की अधिक से अधिक लम्बाई २५० मील और पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई १३० मील है।

सिरिया और लेबनान का क्षेत्रफल ७०,००० वर्ग-मील है। जन संख्या ३५ लाख है। सिरिया के अधिकांश निवासी सुन्नी मुसलमान हैं और लेबनान में सिरियन क्रिश्चियन (ईसाई) रहते हैं। भिन्न भिन्न प्रदेशों के बीच में स्थित होने के कारण सिरिया पुराने समय से व्यापार के लिये प्रसिद्ध रहा है।



सूचना

अरब के पश्चिम में सिरिया का ऊँचा पठार चूने के पत्थर का बना है। यह पठार भूमध्यसागर की ओर इतना ऊँचा हो जाता है कि वहाँ पर ऊँचे ऊँचे पहाड़ प्रगट होने लगते हैं। यहीं लेबनान और एण्टी लेबनान पर्वत है। लेबनान का अर्थ धवल गिरि अथवा सफेद पहाड़ है। चूने की चट्टानों का बना होने के कारण यदि कोई नीचे से इन पर्वतों को देखे तो ऊपर की वनस्पति ओझल हो जाती है निचले भाग की नङ्गी और कुछ सफेद चट्टानें नज़र आती हैं। इनके बीच में दरार की गहरो घाटी है। यह दरार की घाटी जार्डन, मरासागर और लाल सागर होती हुई अफ्रीका को चली गई है। पहाड़ों के निचले नंगे ज़ीनेदार ढालों को देख कर किसी को अनुमान नहीं हो सकता कि पहाड़ के ऊपरी भाग में तरह तरह की फसलें और अंगूर की लतायें फैली हुई हैं और उनके बीच बीच में शहतूत के पेड़ खड़े हुये हैं। अधिक ऊँच भागों में एक प्रकार के देवदारु के पेड़ हैं। नीचे नालों के पास जैतून के पेड़ों के बीच में गाँव बसे हैं। लेबनान और एण्टी लेबनान पर्वत एक दूसरे के समानान्तर चले गये हैं। उत्तर-पूर्व दिशा में ये कुछ कुछ



समुद्र-तट के भी समानान्तर हैं। लेबनान पर्वत अधिक ऊँचा है। इसकी सबसे ऊंची चोटी (दहरूल कूदिब) १०५११ फुट ऊंची है। इसके दक्षिण में जबील मुन्नीन की गोल चोटी ८५०० फुट ऊंची है। इसके आगे अधिक दक्षिण की ओर पर्वत नीचा हो गया है। पर्वत का पूर्वी ढाल अधिक सपाट है। इस ओर गाँव या खेत नहीं हैं। तलहटी में इसकी चौड़ाई २० मील है। पश्चिम की ओर ढाल क्रमशः है। इसी ओर गाँव भरे पड़े हैं और जीने दार खेत प्रायः चोटी तक फैले हुये हैं। एण्टी लेबनान का उत्तरी भाग जबीलश्शरकी या पूर्वी पहाड़ कहलाता है। एण्टीलेबनान पर्वत कम ऊँचा है। इसका सपाट ढाल पश्चिम की ओर है। इस ओर धाराओं और गाँवों का प्रायः अभाव है। पूर्व की ओर ढाल क्रमशः है। इसके कुछ ऊँचे मैदानों और गहरी कन्दराओं को छोड़कर शेष भाग खेती करने के योग्य नहीं है।

एण्टीलेबनान के पूर्व में ही दमश्क का प्रसिद्ध शहर और उपजाऊ मैदान है। जिन झीलों में दमश्क की छोटी नदियाँ गिरती हैं उनके पास यह मैदान अधिक

उपजाऊ है। इस मैदान का आकार एक आयताकार त्रिभुज के समान है। दक्षिण की ओर इसकी लम्बाई २८ मील है। पूर्व की ओर इसकी चौड़ाई १७ मील है। एण्टीलेबनान के पास पास यह ३३ मील तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल २५६ वर्गमील है।

इस मैदान को एण्टीलेबनान के पूर्वी ढाल से निकलने वाली दो नदियों ने उपजाऊ बनाया है। बरदा नदी अधिक उत्तर की ओर है और अधिक लम्बी है। यह नदी एण्टीलेबनान के उस स्थान से निकलती है जहां जबीलश्शरकी और जबीलश्शेख पहाड़ियाँ मिलती हैं। दक्षिणी-पूर्वी दिशा में बड़े वेग से बहने के बाद बरदा नदी अपने मार्ग के पहाड़ी टीले को काट कर आगे मैदान में प्रवेश करती है। मैदान में यह ठीक पूर्व की ओर बहती है। दमश्क शहर बरदा नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है। अगर बरदा नदी न होती तो दमश्क शहर न बस पाता। मैदान रेगिस्तान बन जाता। लेकिन इस नदी से निकलने वाली असंख्य नालियाँ मैदान को सींचकर इसे हरा भरा और सुहावना बनाती हैं। इन नालियों से बरदा नदी का जो कुछ थोड़ा सा

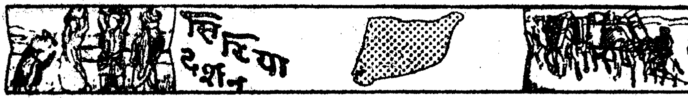
पानी बच जाता है वह दमश्क शहर के पूर्व में स्थित एक झील में पहुँचता है। तीनों झीलों में यह झील अधिक उत्तर में है। दूसरी नदी अवाज है। जबील-श्शेख से निकलने वाले कई नालों के मिलने से अवाज नदी मिली है। यह नदी पूर्व की ओर सांप के समान टेढ़ी चाल से चलती है। इसके किनारों पर झाऊ, झाड़ियां, चरागाह और हरे भरे खेत हैं। यह नदी बरदा नदी से केवल एक तिहाई लम्बी है लेकिन यह गहरी और तेज है। मैदान को सींचने के बाद जो कुछ इसका पानी बच जाता है वह दमश्क शहर के दक्षिण में स्थित एक झील में पहुंचता है। गरमी की ऋतु में इसका पानी झील तक नहीं पहुंचने पाता है।

इस प्रकार सीरिया देश चार प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है। १—तंग तटीय मैदान, २—पश्चिमी पर्वत श्रेणियां, ३—मध्यवर्ती दरार की घाटी का दबा हुआ मैदान और पूर्वी पर्वत श्रेणियां।

भूमध्य सागर से लगा हुआ तटीय मैदान इतना तंग है कि अक्सर पश्चिमी पहाड़ियां समुद्र के ऊपर

उठी हुई मालूम होती हैं। एलेग्जेंड्रीट, ट्रिपोली, बेरूत आदि कुछ स्थानों के पास यह तंग मैदान कुछ अधिक चौड़ा हो गया है। तंग होने पर भी यह तटीय मैदान बड़ा उपजाऊ है। यहीं की फसलों से तट पर स्थित नगरों को भोजन मिलता है। ट्रिपोली और सिडान के मैदान में यहां की जगत्प्रसिद्ध नारंगियां पैदा होती हैं जो संसार के सभी भागों को भेजी जाती हैं। बेरूत के मैदान में जैतून के बगीचे लगे हुये हैं। लतकिया के मैदान में अच्छी तम्बाकू पैदा होती है।

२—पश्चिमी पर्वत श्रेणियां गहरी कंदराओं से कटी होने के कारण उत्तर से दक्षिण तक तीन खंडों में कटी हुई हैं। अमानस या ग़बूर दागी टारस पर्वत का अंग है। यह उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर चला गया है। यह पर्वत सिलीशिया के मैदान को एण्टिओक के मैदान से अलग करता है। एक अंतरीप के रूप में यह समुद्र तक पहुँच गया है। बग़दाद रेलवे को इसके अमानस दर्रे से गुज़रने के लिये अधिक उत्तर को जाना पड़ता है। दर्रे को पार करने के पहले रेलवे दक्षिण की ओर पहाड़ के सुरंग में प्रवेश करती है। उत्तरी सिरे पर



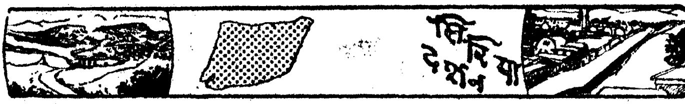
पिरामस नदी अधिक सुगम दर्रा बनाती है। ये दोनों दर्रे टर्की में हैं। अधिक दक्षिण की ओर बेलान दर्रा या सिरिया द्वार है।

मध्यवर्ती विशाल पर्वत श्रेणी ओराएण्टीज नदी के मुहाने से आरम्भ होती है। इन पहाड़ियों को जब्रील अक्राद् नाम से पुकारते हैं। पर्वत का प्रधान भाग इस के दक्षिण में है और जब्रील अन् नसीरिया कहलाता है। यहीं अंसारिया नाम के इस्लामी कबीले ने अपनी धार्मिक और राजनैतिक स्वाधीनता को किसी प्रकार बना रक्खा है। प्रधान पहाड़ी की औसत उँचाई ३००० फुट है। आरोंटीज घाटी की ओर इसका ढाल एकदम सपाट है। पश्चिम में भूमध्य सागर की ओर ढाल क्रमशः है। पहाड़ियों के बीच बीच में पठार है। यहां कहीं कहीं खेती भी होती है। पहाड़ के ऊपर चूने की सफेद और नङ्गी चोटियाँ उठी हुई हैं। इनके नीचे वाले ढालों पर पेड़ हैं।

पहाड़ का दक्षिणी खंड त्रिपली-हाम्स रेलवे के दक्षिण में घने जङ्गल से ढका है। इस पहाड़ को जबील अक्कार नाम से पुकारते हैं। अधिक आगे चल कर

यह सिरिया के सर्व प्रसिद्ध लेबनान पर्वत से मिल गया है। लेबनान की कई चोटियाँ १०००० फुट से अधिक ऊँची हैं। दिसम्बर से अप्रैल तक ऊपरी भाग में वर्षा होती है या बर्फीली आँधियाँ चलती हैं। चोटियों पर बरफ जमी रहती है और सपाट ढालों पर एवलांश (हिमागार) खिसक आते हैं। पहाड़ी ढालों पर जहाँ मिट्टी बचती है वहाँ परिश्रमी किसानों ने खेत बना लिये हैं। जगह जगह पर बकरियों के चलने से पगडंडियाँ बन गई हैं। लेबनान पर्वत लिओएटी की नदकन्दरा (लीतान्त की नहर) तक चला गया है। इसके आगे दक्षिण में गेलिली की पहाड़ियाँ हैं जो पेलेस्टाइन में स्थित हैं।

(३) मध्यवर्ती मैदान—दो पहाड़ों के बीच का मैदान सिरिया में अधिक स्पष्ट नहीं है। यहाँ की दरारी घाटी मरासागर की तरह अधिक गहरी नहीं धंसी है। उत्तर की ओर लेक एण्टिओक के पास इस मैदान का उत्तरी सिरा है। दक्षिणी भाग ओरोण्टीज की घाटी से बना है। यह नदी लेबनान और एण्टी लेबनान के बीच में ऊंचे भाग से निकलती है। मैदान के दक्षिणी भाग का



पानी लीतानी नदी बहा ले जाती है। ओरोण्टीज घाटी का मध्यवर्ती भाग नसीरिया प्रदेश में स्थित है। यह भाग उपजाऊ है। लेकिन यहाँ कुछ दलदल बन गये हैं। लीतानी और ओराण्टीज का जल-विभाजक प्राचीन बालबक नगर के खंडहरों के पास है।

पूर्वी पर्वत श्रेणी लगातार अटूट नहीं चलती है। जगह जगह टूटो-फूटी पहाड़ियाँ हैं। कहीं कहीं पर वे एक लहरदार पठार के सिरे हैं। उत्तर की ओर पठार पर पानी और पेड़ों का अभाव है। रेगिस्तान के पास पठार और भी अधिक खुश्क हो गया है। वैसे पठार पर पानी सब कहीं कम बरसता है।

पूर्वी पर्वत श्रेणी हाम्स नगर के सामने से आरम्भ होती है और एण्टी लेबनान कहलाती है। ओराण्टीज की घाटी इसे लेबनान पर्वत से अलग करती है। कुछ चोटियाँ ६००० फुट से अधिक ऊंची हैं। लेकिन यहां वर्षा की कमी है और बनस्पति का अभाव है। दक्षिण की ओर बरदा नदी ने एण्टो लेबनान पर्वत को काट दिया है। इसी कंदरा में होकर बेरूत से दमश्क को छोटो (मीटर गेज) रेलवे लाइन जाती है। बरदा

की कंदरा के पास ही दमश्क शहर बसा है। इस गोर्ज के दक्षिण में हिमाच्छादित हर्मन पर्वत स्थित है। इसकी चौड़ाई १०००० फुट है।

(४) पूर्वी पठार और रेगिस्तान—इस पठार के सिरे पर कहीं पहाड़ियाँ हैं और कहीं नहीं हैं। जहां पहाड़ियां नहीं हैं वहां पानी लाने वाली हवायें अधिक पूर्व तक पहुँच जाती हैं।

हैरान के दक्षिण में जबील अद्‌दूज़ का ऊँचा और एकाकी पठार है। यहीं दूज़ सम्प्रदाय के मुसलमान लोग रहते हैं। सिरिया के पूर्वी भागों में प्रायः सब कहीं रेगिस्तान हैं। शेष भागों में जहां कहीं लावा की नई कड़ी तहें बिछ गई हैं वहां भी किसी प्रकार की उपज नहीं हो सकती है।



जलवायु

सिरिया के तटीय प्रदेश की जलवायु सर्वोत्तम है। भूमध्य सागर यहां की जलवायु को समशीतोष्ण बना देता है। बारूत का औसत ताप-क्रम ६८ अंश फारेन हाइट रहता है। तूफानी पछुआ हवायें शीत काल में पानी बरसा जाती हैं। बेरूत में वर्ष भर में २२ इंच पानी बरसता है। पहाड़ी भाग में और भी अधिक वर्षा होती है। लेबनान पर्वत पर साल में ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। तटीय प्रदेश में हिम वर्षा कभी नहीं होती है। पठारी भाग में समुद्री हवाओं का असर न पहुंचने के कारण गरमी में विकराल गरमी पड़ती है। दमश्क में बेरूत से कहीं अधिक गरमी पड़ती है। शीत काल में मध्य एशिया की ठंडी हवायें इस पठारी भाग पर चला करती हैं। इनके चलने से ठंढ अधिक हो जाती है। पठार पर पाला पड़ता है। पहाड़ पर वे बरफ बरसाती हैं भीतरी भागों में वर्षा की बड़ी कमी रहती है। वहां शीत काल में विकराल जाड़ा और गरमी की ऋतु में बड़ी गरमी होती है। शीत काल और ग्रीष्म के तापक्रम में बड़ा अन्तर रहता है। दिन और रात के तापक्रम में भी बहुत भेद हो जाता है। गरमी के आरम्भ में रेगि-

स्तान की ओर से आने वाली गरम और खुश्क आंधियां अपने साथ बहुत सी बालू लाती हैं। इससे तटीय प्रदेश की फसलों को बड़ी हानि होती है। इस प्रकार नदियों के डेल्टा और तटीय प्रदेश को छोड़ कर (जहां प्राचीन फोनीशिया देश था) सिरिया के शेष भागों में फसल उगाने के लिये सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। ओरोण्टीज़ आदि सिरिया की बड़ी बड़ी नदियां गहरी तली बना कर बहती हैं। ऊँचे किनारों के ऊपर उनके पानी को नहीं लाया जा सकता। इससे वे सिंचाई के लिये अनुकूल नहीं पड़ती हैं। सिरिया के बीच वाले भाग में झीलों के पड़ोस में उपजाऊ नखलिस्तान बन गये हैं। शेष भाग में केवल चरागाह हो सकते हैं। अलप्पो के दक्षिण और पूर्व के मैदान में वसन्त ऋतु में वर्षा होती है। इसी से वसन्त ऋतु में यहाँ अच्छी घास उग आती है। इस घास को चराने के लिये दूर दक्षिण के बद्दू आ जाते हैं। रक्का-होम्स के दक्षिण में वर्षा की इतनी कमी है कि यहां घास नहीं उग पाती और रेगिस्तान आरम्भ हो जाता है। रेगिस्तान के बीच बीच में पल्मायरा आदि कुछ नखलिस्तान हैं।



वनस्पति और पशु

सिरिया में भूमध्य सागरीय, रेगिस्तानी और स्टेपी वनस्पतियों का मेल होता है। भूमध्य सागर की वनस्पति तटीय प्रदेश और पहाड़ के पश्चिमी ढालों पर पाई जाती है। इस ओर की झाड़ियों के पत्ते हरे रहते हैं। यहां के पौधे बसन्त ऋतु में तेज़ी से फूलते हैं। पश्चिमी पहाड़ के पूर्वी ढालों पर स्टेपी प्रदेश की वनस्पति और घास पाई जाती है। दक्षिणी सींचे हुये भागों में छुहारे और खुश्क भागों में सूखी मुरझाई हुई कांटेदार वनस्पति कहीं कहीं पाई जाती है।

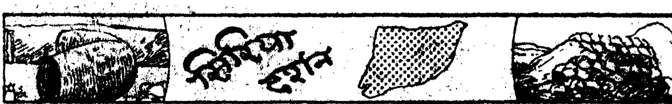
हर्मन और लेबनान पर्वतों के ढाल एक प्रकार की अल्पायन वनस्पति से ढके हुये हैं। यहां कई प्रकार के पौधे और लतायें होती हैं। कुछ निचले ढालों पर सिन्दूर और देवदार के पेड़ होते हैं। अधिक ऊँचाई पर बहुत छोटे पौधे उगते हैं।

जंगली जैतून किसी काम का नहीं होता है। लेकिन कलम से लगाया हुआ जैतून यहां के लोगों के बड़े काम का होता है। जब जंगली जैतून में अच्छे जैतून की कलम लग जाती है तब इसके ऊपर

निकलने वाली शाखाओं में अच्छे फल लगते हैं। जैतून का पेड़ दस वर्ष का होने पर फल देने लगता है। बढ़ने पर जड़ से दो तीन या अधिक शाखायें फैलती हैं। जैतून का पेड़ बहुत वर्षों तक फल देता रहता है। फिर भी अधिक ठंड में पेड़ सूख जाते हैं। एक प्रकार का कीड़ा भी इसके फलों को बिगाड़ देते हैं। बिगड़ने पर इसके बीजों से अच्छा तेल नहीं निकलता है। जैतून की शाखायें मुड़ी हुई होती हैं। इसके पत्ते कुछ कुछ अरहर की पत्तियों के समान हरे होते हैं। इसकी लकड़ी रेशेदार और मज़बूत होती है।

अंगूर की लतायें हमन और लेबनान के ढालों और मैदान में लगाई जाती हैं। लतायें खूब फैलती हैं। और इनमें अच्छे अंगूर लगते हैं। अंगूर के बगीचे मुसलमानों के हाथ में हैं। पहले तो लोग अंगूरों से शराब कम बनाते थे लेकिन अंगूरों को सुखा कर वे किशमिश और मुनक्का बना लेते थे। कुछ लोग इनका रस (सिरप) निकाल लेते हैं। अब यहां के अंगूरों और किशमिशों से बढ़िया शराब बनने लगी है।

अंजीर और अंगूर के बगीचे अक्सर साथ साथ



पाये जाते हैं। अंजीर के पत्ते बड़े और मोटे होते हैं। इसी से इसके नीचे अच्छी छाया रहती है। अंजीर का पेड़ पथरीले और उजाड़ स्थानों पर भी उग आता है। पेड़ में साल भर में चार बार फल लगते हैं। पत्ते निकलने के बाद पहली फसल के फल लगते हैं। ये जून मास में पक जाते हैं। गरमी में लगने वाला फल अगस्त मास से पहले नहीं पकता है।

शीत काल के फल पत्तियों के गिर जाने पर भी पेड़ में लगे रहते हैं और पकते रहते हैं। जङ्गली अंजीर कुछ कुछ बरगद की तरह होता है।

बादाम के पेड़ में सबसे पहले फूल आते हैं। जनवरी या फरवरी महीने में बादाम का पेड़ सफेद फूलों से लद जाता है। हरी पत्तियाँ बाद को निकलती हैं। पत्तियों के रहते रहते फल तयार हो जाता है। इस प्रकार एक ही टहनी पर कली, फल और पत्ती एक साथ देखी जा सकती है।

लेबनान के सीडर या देवदारु दुनिया भर में अपनी शान के लिये प्रसिद्ध हैं। ये पेड़ समुद्र-तल से प्रायः ६००० फुट की ऊँचाई पर उगते हैं। किसी एक जगह

पर कुछ पेड़ सदियों के पुराने खड़े मिलेंगे। उनके आस पास नये पेड़ उग आते हैं। ये नये पेड़ बीज या पुरानी जड़ों से उगते हैं। बहुत से पौदों को बकरियाँ चर लेती हैं कुछ पेड़ तूफान में गिर जाते हैं। यह सब देवदारू हिमालय में उगने वाले देवदारू के ही समान हैं।

सिरिया में पुराने बड़ी जाति के पशु प्रायः नष्ट हो गये हैं अथवा कम हो गये हैं। हिरण, तेन्दुआ, भालू पहले यहां बहुत पाये जाते थे। बन बिलाव, लकड़बग्घा, भेड़िया, शृगाल, नेवला, लोमड़ी इस समय भी बहुत हैं। चिमगादड़ सब कहीं मिलता है।

चिड़ियों में जंगली बतख, उल्लू, कौआ, शुतुर्मुर्ग, सारस, बगुला, तीतर आदि बहुत हैं।

ज़हरीले साँप यहां कम हैं। कुछ सांप पथरीले भागों और एकान्त की पहाड़ियों में मिलते हैं। विषरहित सांप चूहा टिड्डी, कीड़े आदि खाकर किसान की बड़ी सहायता करते हैं। छिपकली और बिच्छू भी बहुत हैं। नदियों और झीलों में कई प्रकार की मछलियों की अधिकता है।

उपज

सिरिया के जिन भागों में वर्षा पर्याप्त है और ऊँचाई अथवा समुद्र की समीपता के कारण तापक्रम अनुकूल है वहीं उपजाऊ भागों में खेती होती है। सिरिया और लेबनान का तटीय मैदान, ओराण्डीज की घाटी और हारान प्रदेश गेहूं की उपज के लिये प्रसिद्ध हैं। जौ बहुत से भागों में उगता है। मकई, जई, आलू, कपास, तम्बाकू दूसरी फसलें हैं। यहां की तम्बाकू बहुत बढ़िया होती है। खेत जोतने का काम ऊंट से लिया जाता है। कहीं कहीं ऊंट के साथ गधा भी जोत लिया जाता है। हल जोतने का ढंग बहुत पुराना है।

जिन भागों में शहतूत के पेड़ों की अधिकता है वहां रेशम तयार किया जाता है। सिरिया की नारंगियां जाफा के ही समान बड़ी और मीठी होती हैं। अंजीर जैतून और नींबू भी प्रसिद्ध है। खुश्क और रेगिस्तानी भागों में जहाँ कहीं घास उग आती है वहां ऊँट, घोड़े, गधे, बकरी आदि जानवर पालते हैं। इन भागों में जहां सिंचाई की सुविधा है वहां छुहारा भी होता है। इसी से इस ओर के बद्दू लोगों का प्रधान भोजन दूध और छुहारा है। अधिक दूर के लिये ऊंटनी पाली जाती है।

आने जाने के मार्ग और व्यापार

हाल में सिरिया में आने जाने के मार्गों में बड़ी उन्नति हुई है। इस समय सिरिया में समस्त सड़कों की लम्बाई ४००० मील से ऊपर है। इनमें १३८४ मील में मोटर चल सकते हैं। रेल मार्गों की भी सुविधा है। बेरूत से हाम्स, हामा, अलप्पो (हलब) और दमश्क को रेलें गई हैं। दमश्क से दक्षिण सिरिया और पेलेस्टाइन को रेल गई है। रियाक् ममलतीन से अलप्पो, हाम्स से ट्रिपली को भी रेल शाखायें गई हैं।

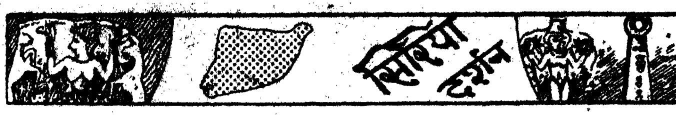
सिरिया की स्थिति पुराने समय से व्यापार के लिये बड़ी अच्छी रही है। प्राचीन फोनिशियन व्यापारी संसार भर में प्रसिद्ध थे। मार्गों की सुविधा के साथ साथ सिरिया की उपज भी हाल में बढ़ गई लगभग १० लाख टन गेहूँ ५०००० मन तम्बाकू कुछ शक्कर और कपास बाहर भेजने के लिये तयार की जाती है। उत्तरी भागों में सफेद शहतूत के उगने के कारण बहुत सा कच्चा रेशम तयार होता है और बाहर भेजा जाता है। यहाँ की प्रसिद्ध नारंगियां, नींबू और केले भी बाहर भेजे जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

सिरिया में पत्थर के कुछ गोल घेरे बहुत ही प्राचीन समय के मिले हैं। इतिहास काल में भिन्न भिन्न जातियां सिरिया में लड़ीं और बस गईं। आर्मेइयन लोगों ने प्राचीन मूल निवासियों को मिला लिया। इन पर यूनानी और रोमन लोगों का प्रभाव पड़ा। फिर भी आर्मेइयन भाषा बची रह गई। प्राचीन समय में हर एक नगर अपने पड़ोस के प्रदेश को मिला कर एक अलग राज्य बनाता था। सिरिया में इस प्रकार के अनेक नगर राज्य बन गये थे। उच्च घरानों के लोग इन राज्यों का प्रबन्ध करते थे। इससे १६००० वर्ष पूर्व समस्त उत्तरी सिरिया कापाडोशियन हाटी अधिकार में आ गया। दक्षिणी सिरिया अमान कहलाता था। यहां अक्काद के सर्गन की फौजें पहुँची थीं। इस समय को कनानी काल कहते हैं। इसके बाद ईसा से १०० वर्ष पूर्व आर्मेइयन काल आरम्भ होता है। सिरिया में मिश्र और बेबिलान के लोग ईसा से १६०० वर्ष पूर्व ही आकर एक दूसरे से मिलने लगे थे। फोनेशियन लोगों ने यहां के कारबार को बहुत उन्नत किया। ये लोग गोटा किनारी लगे हुये बहुत बढ़िया वस्त्र तयार करके पश्चिमी

योरुप में बेचने के लिये ले जाते थे। वस्त्रों के अतिरिक्त वे शीशा आदि और भी बहुत सा सामान ले जाते थे। सिरिया के प्रत्येक वंश का अधिपति या बाल अलग होता था। अधिष्ठात्री अश्तर या अश्तरत कहलाती थी। स्थानीय देवी और देवताओं के अतिरिक्त वे दूसरे देवताओं को भी मानते थे। कभी कभी वे नर-मेध भी करते थे। सिरिया के इतिहास का कुछ पता मिश्र से चला। मिश्र देश के राजाओं ने सिरिया पर आक्रमण किया था। वे सिरिया को अमू या साहो कहते थे। अलप्पो, मदेश, सैदा (सिडन) आदि नगरों का भी उल्लेख आता है। मिस्री लोगों के ही समय में सिरिया के भागों पर अमोरी, मितानी और स्वेत लोग शासन करते थे। स्वेत लोग उत्तरी भाग में फरात नदी की घाटी में राज्य करते थे। ईसा से १०५० वर्ष पूर्व यहाँ एसीरिया का अधिकार हो गया।

स्वेत लोगों के पतन के बाद सिरिया के अधिकांश नगरों पर आर्मेइयन लोगों का अधिकार हो गया। धीरे धीरे इन्होंने समस्त सिरिया पर अधिकार कर लिया। दमश्क शहर का इस्रायली लोगों के इतिहास पर गहरा



प्रभाव पड़ा। कुछ समय के लिये यहां डेविड (दाऊद) का राज्य हो गया। प्राचीन समय में सिरिया का हमाथ प्रदेश (जो ओराएटीज की घाटी में स्थित था) बड़े महत्व का था। इंजील के अनुसार यहां के निवासी कनानी कहलाते थे। ईसा से ७२० वर्ष पूर्व सर्गन ने हमाथ पर अधिकार कर लिया। इसके बाद बेबिलान और मिस्र एक दूसरे से सिरिया के प्रभुत्व के लिये लड़ते रहे। आगे चलकर सिरिया पर बेबिलान का ही अधिकार हो गया। फोनिशियन और अन्य लोगों को कुछ स्वाधीनता मिली रही। फोनिशियन लोग ही प्राचीन ईरानी (पारसी) लोगों को जल सेना देते थे। ईसा से ३३२ वर्ष पूर्व सिरिया पर सिकन्दर महान का हमला हुआ। सिकन्दर के बाद सिरिया में कई बड़े नगरों की स्थापना हुई। इनमें एण्टिओक एक है।

ईसा से ६४ वर्ष पूर्व सिरिया को रोमन लोगों ने जीत लिया और सिरिया रोमन साम्राज्य का एक महत्व-पूर्ण प्रान्त बन गया। इस प्रान्त की राजधानी एण्टिओका थी। यहां बड़े आलीशान भवन बन गये। अपने समय में एण्टिओक समस्त रोमन साम्राज्य के नगरों में तीसरा स्थान

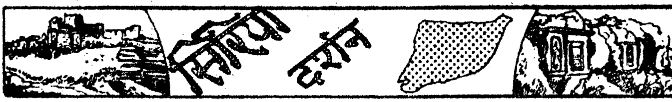
रखता था। शासन के अनुसार सिरिया भिन्न भिन्न रोमन शासकों के समय में भिन्न भिन्न उप प्रान्तों में बटा था। फोनिशिया या तटीय भाग की राजधानी टायर नगर था। लिबनून की राजधानी एमेसा (हाम्स) थी। फरात-प्रदेश की राजधानी हेरापोलिस थी।

६१६ ईस्वी में सिरिया पर थोड़े समय के लिये फारस के राजा खुशरो द्वितीय का शासन हो गया। ६२२ से २८ तक फिर रोमन राज्य हो गया। ६३६ से यहां मुसलमानों का राज्य हुआ। १२६० ई० में सिरिया पर मंगोलों का विध्वंसकारी आक्रमण हुआ। १५१६ में आन्तमन तुर्कों ने यहां अपना अधिकार जमा लिया। पिछली बड़ी लड़ाई (१६१८) तक यहां तुर्कों का ही राज्य रहा। लड़ाई के पूर्व ही सिरिया के लोगों में राष्ट्रीय भावना जागृत हो चुकी थी। सिरिया-वासियों को सन्तुष्ट रखने के लिये तुर्की के प्रधान मन्त्री ने उन्हें कुछ अधिकार दिये। १६१३ में अरबी भाषियों की एक सभा पेरिस में हुई। इसके अधिकतर सदस्य लेबनान और बेरूत से आये थे जहां फ्रांसीसी प्रभाव था। तुर्की ने तीन मुसलमान सदस्यों को निमन्त्रण भेजा

कि वे कुस्तुन्तुनिया पधारें। लड़ाई आरम्भ होने पर फ्रांस ने पूर्वी भूमध्य सागर में अपने हितों को फिर दुहराया। फ्रांस के साथी ब्रिटेन और रूस ने १९१६ में फ्रान्स को पूरा अधिकार दे दिया कि वह इस ओर जो चाहे सो करे। युद्ध काल में तुर्की सरकार ने सिरिया के राष्ट्रीय नेताओं का घोर दमन किया। इसके अति-रिक्त युद्ध काल में यहां कोई विशेष घटना न हुई। युद्ध के अन्त में १९१८ में ब्रिटिश फौजें इस ओर भी आईं और यह भाग उन्हीं के हाथ में आ गया। १९१८ के नवम्बर मास में ब्रिटेन और फ्रांस ने घोषणा की कि वे मेसोपोटामिया और सिरिया में राष्ट्रीय सरकार स्थापित करना चाहते हैं। इस बीच में सिरिया के तटीय प्रदेश में बेरूत के आसपास फ्रान्सीसी लोग शासन प्रबन्ध करने लगे। अमीर फैसल की अध्यक्षता में दमश्क में अरबों की सरकार बनी। लेकिन यहां भी फ्रांसीसी प्रभुत्व मान लिया गया। १९२० में अरबी नेताओं ने अपनी स्वाधीनता घोषित की और आन्दोलन आरम्भ किया। उन्होंने फैसल को अपना राजा बनाया। लेकिन ब्रिटेन और फ्रांस ने इसका विरोध किया। फ्रान्सीसी

सेना दमश्क पर चढ़ आई। फैसल अपने साथियों के साथ भीतर की ओर भाग आया। स्थिति की जांच करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति बनी। इसमें दो अमरीकन थे। इन्होंने कहा कि अरबों को फ्रांसीसी शासन स्वीकृत न होगा। लेकिन इनकी सुनवाई न हुई और राष्ट्रसंघ ने सिरिया पर शासन करने के लिये फ्रांस को आदेश दे दिया। शासन के लिये फ्रांस ने सिरिया को चार प्रान्तों में बाँट दिया। लेबनान प्रान्त (जहां ईसाइयों की अधिकता है) इसकी राजधानी बेरूत में बनाई गई। दमश्क प्रान्त की राजधानी दमश्क, अलप्पो प्रदेश का प्रधान नगर अलप्पो था। अलावीन प्रान्त की राजधानी लताकिया नगर था।

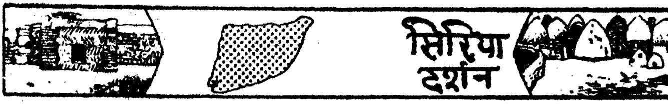




द्रूज़-विद्रोह

फ्रान्स को आरम्भ से ही विद्रोह का सामना करना पड़ा। १९२२ में दमश्क के विद्रोह को फ्रान्सीसियों ने बुरी तरह से दबाया। १९२० में जबील-अन्सार्य का विद्रोह भी इसी तरह दबाया जा चुका था। लेकिन द्रूज़ प्रदेश में कोई वर्ष बिना विद्रोह के नहीं बीता। १९२५ में फ्रांसीसी फौजों की संख्या पहले से कहीं अधिक बढ़ा दी गई। इसी वर्ष द्रूज़ प्रदेश में पहले से भी अधिक भीषण विद्रोह हुआ। दमश्क के लोग भी उठ खड़े हुये ऐसा मालूम पड़ता था कि सारे सिरिया देश में विद्रोह की आग भड़क उठेगी। लेकिन फौजों ने १९२६ तक विद्रोह को दबा दिया। कुछ द्रूज़ नेता देश छोड़ कर भाग गये। कुछ दबा दिये गये। लोगों को शान्त रखने के लिये कुछ चुने हुये सदस्य भी बुलाये गये। अधिकतर लोगों ने चुनाव का बहिष्कार किया। फ्रांसीसी देख भाल में अन्त में अहमदनवी बेग ने सिरिया की सरकार बनाई अलावीन में भी प्रतिनिधियों की सभा बुलाई गई। लेबनान में लोगों को अधिक अधिकार मिले और वहाँ प्रजातन्त्र घोषित किया गया। सिरिया में भी प्रजातन्त्र

घोषित किया गया। लेकिन सिरिया वासियों ने लेबनान को भी अपना अंग बना रहने के लिये आग्रह किया। इस पर फ्रांस और सिरिया वासियों में समझौता न हो सका और विद्रोह की आग बराबर भड़कती चली आई। लेबनान की जनसंख्या अधिकतर ईसाई है और चाहती है कि फ्रांस की देख भाल बनी रहे। सिरिया के निवासी अधिकतर मुसलमान हैं। वे पूर्ण स्वतंत्रता चाहते हैं। इन दोनों में मेल न हो सका। फ्रांस और सिरिया के बीच मित्रता सम्बन्धी सन्धि करने की बात-चीत वर्षों चली लेकिन तय न हो पाई। इसी बीच में योरुप में फ्रांस का पतन हुआ। इटली और जर्मनी ने विची सरकार पर दबाव डाल कर सिरिया में अपना प्रभुत्व बढ़ाना चाहा। क्रीट पर जर्मन अधिकार हो जाने से ब्रिटेन को डर लगने लगा कि जर्मन सेनायें सिरिया पर धावा न बोल दें। इसलिये ब्रिटेन ने भारतीय सेनाओं को भेजकर पहले ही अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस समय जर्मनी की सेनायें इधर पहुँच नहीं सकती थीं। फ्रांसीसी सेनाओं का विरोध विफल हुआ। इसलिये सिरिया के भाग्य का निर्णय इस युद्ध के अन्त में ही हो सकेगा।



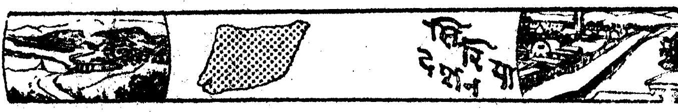
जन-संख्या

सिरिया की जन संख्या ३५ लाख है। सिरिया प्रधान की जन संख्या सबसे अधिक है। लेकिन लेबनान सबसे अधिक घना बसा हुआ है। अलविस की जन संख्या लगभग ४ लाख है। जबील अद् द्रूज में एक लाख से कम मनुष्य रहते हैं। सबसे घनी जन संख्या दमश्क और अलप्पो के नखलिस्तानों और ओरोएटीज़ की घाटी में बसी हुई है। अधिकतर लोग सेमाइटिक जाति के अरबी मुसलमान हैं। दूसरा स्थान आर्मेनियन जाति के लोगों का है। कहीं कहीं आर्मेनियन लोगों में अरबी रुधिर मिल गया है। धुर उत्तरी सिरे पर कुर्द लोग बसे हैं। कुर्द लोग फरात नदी के आगे से आकर यहां बस गये हैं। इस समय कुर्द लोग कोमेजेनियन मैदान और फरात नदी के उस पार वाले मैदान में रहते हैं। इनके बीच बीच में और अमानस तथा टारस पर्वत के प्रदेश में आर्मेनियन लोगों ने भाग कर सिरिया में शरण ली। ये लोग दक्षिण में एण्टीओक के मैदान और साजुर के बेसिन तक फैल गये हैं। अलप्पो और

देश दर्शन

एण्टिओक के उत्तर में युरुक, अवशार आदि घुमक्कड़ तुर्कमान लोग हैं। तुर्कमान लोग यहां मुसलमान धर्म फैलने के पहले ही आ गये थे। यहीं कहीं कहीं सिरके-शियन लोगों की वस्तियां हैं। फोनिशियन तट पर बहुत से यूनानी बसे हुये हैं। घास वाले स्टेपी प्रदेश में अना-जह वंश के असली अरबी लोग बसे हैं। ये लोग १३ शताब्दी से छोटी छोटी टोलियों में नजद से यहां आते रहे हैं। तुर्क लोग अधिकतर उत्तरी भाग में हैं। २८००० फ्रान्सीसी आदि गोरे योरुपीय लोग सरकारी ऊंची नौकरी और व्यापार के काम से सभी भागों में फैले हुये हैं। बीच वाले भाग में पश्चिमी लेबनान में मेरोनाइट और हर्मन पर्वत और जबील हारान पर द्रूज़ लोग बसे हैं। सिरियन लोग वर्ण संकर हैं। वे प्राचीन फोनिशियन, यहूदी और अरबी रुधिर के मिलने से बने हैं।

पहले सिरियन लोग अरामिक भाषा बोलते थे जिस में इसाइयों को इंजील पहले पहल लिखी गई थी। यह प्राचीन फोनीशियन और एसीरियन के बीच की भाषा थी। लेकिन इस समय सिरियन लोग अरबी भाषा बोलते हैं। विवाहित पुरुष यदि अपनी विवाहिता स्त्री



को छोड़ना चाहे तो वह एक निश्चित रकम देकर स्त्री को छोड़ सकता है। लेकिन व्यभिचार करती हुई पकड़ी जाने पर स्त्री को प्राण दंड दिया जाता है।

हौम्स के पास पहाड़ों पर बेस्त्रादा के पास पहाड़ी में अन्सार्य या नाज़री लोग रहते हैं। ये प्राचीन मूल निवासियों के बचे हुये लोग हैं। ये लोग आर्य हैं। इस समय ये नीचे मैदान में उतर कर लूट मार भी कर लेते हैं। ये लोग आस्मानी नीले रंग को पवित्र मानते हैं। अन्सार्य लोग आवागमन के सिद्धान्त को मानते हैं। जब कोई अन्सार्य अपने धर्म से भ्रष्ट हो जाता है तब वह यहूदी, ईसाई या मुसलमान हो जाता है।

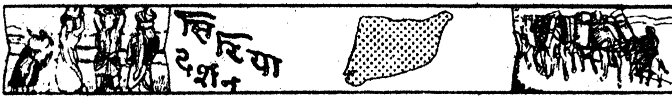
सिरिया के अन्सार्य लोग एक बड़े पुराने आर्य धर्म को मानते हैं। वे सिरिया के पारसी जेन्दाबस्ता के मानने वालों से भी अधिक पुराने हैं। सिरिया के ईसाई और मुसलमान दोनों ही अन्सार्य लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

द्रूज लोग गाना बजाना को पसंद नहीं करते हैं। उनके यहां बाजों का एकदम अभाव है। जब वे युद्ध

करने के लिये जाते हैं तब उनके साथ उत्तेजित करने के लिये ढोल भी नहीं रहता है।

द्रूज़ लोग कुछ खूंख्वार होते हैं। वे बड़े हृष्ट-पुष्ट और सहनशील होते हैं। लोगों का व्यवहार अपने कबीले वालों के साथ बड़ा सच्चा होता है। लेकिन बाहरी लोगों को वे कभी कभी धोखा भी दे देते हैं। द्रूज़ लोगों में तीन वर्ग होते हैं। अमीर लोग शाही खानदान (राजवंश) के होते हैं। शेख लोग भी अच्छे घराने के होते हैं। जालेमात लोग किसान होते हैं और खेती का काम करते हैं।

द्रूज़ एक ही स्त्री से विवाह करता है। विवाह के समय लड़की प्रायः तेरह या चौदह वर्ष की होती है। लड़का सत्रह या अठारह वर्ष का होता है। विवाह होने के तीन दिन पहले दूलह अपने मित्रों के साथ हथियार बन्द होकर लड़की के घर पर आता है। घर वाले (पिता) भी हथियार बन्द होकर स्वागत करने के लिये द्वार पर खड़े मिलते हैं। दूलह लड़की मांगता है। पिता लड़की देने के लिये राज़ी हो जाता है। दहेज़ (महर) भी ठहर जाता है। एक क्षण के लिये बुरका ओढ़े लड़की भी

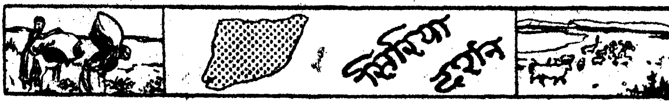


बाहर आती है। यदि लड़की को विवाह स्वीकार होता है तो वह अपने हाथ से बनाये हुये सुन्दर मियान में ढका हुआ खंजर अपने भावी पति को भेंट करती है। इसके बाद दोनों ओर के लोग घर के भीतर प्रवेश करते हैं। लड़की स्नान करने के लिये चली जाती है। यहां वह अपनी सहेलियों के साथ सारा दिन बिताती है। पुरुष घोड़ों पर सवार होकर खेल खेलने बाहर चले जाते हैं अथवा घर में पड़े हुये कहवा पीते हैं और हुक्का गुड़गुड़ाते हैं। विवाह को रात्रि को स्त्रियाँ दूलह को उस कमरे में ले जाती हैं जहां सिर से पैर तक ढको हुई दुलहिन अपने भावी पति की प्रतीक्षा में बैठी होती है। लड़की के बुरके पर सोने का काम जड़ा होता है। दूलह अपने हाथ से बुरका उठा कर दुलहिन के तन्तूर (शिर का आभूषण या तिलक) भेंट में देता है और उसे लड़की के सिर पर रख देता है। यह आभूषण आजन्म विवाहित स्त्री के सिर को सुशोभित करता रहता है। ज्यों ही दूलह बुरका उठाता है त्यों ही दूसरी स्त्रियाँ चिल्लाती हुई दूसरे कमरे में भाग जाती हैं और वहाँ कोलाहल करती रहती हैं। यह कोलाहल घंटों होता

रहता है। पुरुष नाच तमाशे में लगे रहते हैं। कुछ लोग हथियारों को नचाते हैं। कुछ उछलते और कूदते हैं। उनका विश्वास है कि ऐसा करने से जिन्न भाग जाते हैं और विवाह में बाधा नहीं डालते हैं।

सिरिया के लोग सुन्दर सुडौल और बलवान होते हैं। वे व्यापार में निपुण होते हैं। वे यात्रा करना बहुत पसंद करते हैं। कुछ सिरियन व्यापारी योरुप की राजधानियों में कारबार करने लग गये हैं।

सिरिया वासियों की वेषभूषा विचित्र होती है। वे लोग पाजामा या तहमत पहनते हैं। इसके ऊपर ढीली कमीज और बंडी या कोट होता है। वे कमरबन्द अवश्य बांधते हैं। कुछ लोग नंगे सिर रहते हैं। कुछ लोग निवाड़ के समान मोटे सूत की बनी हुई रंगीन दुपलिया टोपी लगाते हैं। कुछ लोग अरबी लोगों की तरह सिर पर लम्बा तहदार रूमाल बांधते हैं। इसे वे रस्सी से बांध लेते हैं। स्त्रियां विचित्र ढंग से अपने सिर के बाल सजाती हैं। चोटी के पास उनके सिर के बाल इस प्रकार बंटे होते हैं कि कुछ बाल गर्दन पर लटकते रहते हैं। शेष बाल रेशम के काले डोरे की सहायता से लटों



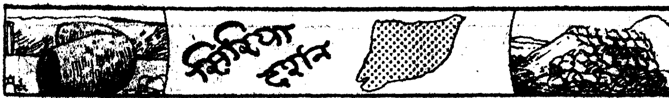
में बांध लिये जाते हैं। ये लटें खुलने पर पैरों तक पहुँचती हैं। इनके सिरों पर अमीर स्त्रियां सोने चांदी के (हार) आभूषण से सजाती हैं। आभूषण बँधे होने के कारण नीचे लटकने पर बाल सीधे रहते हैं। कुछ स्त्रियां लटों के बीच में फीता और फूलों की माला गुथ लेती हैं। इससे यह सिर पर टोपी के समान मालूम पड़ती है। शहरों की स्त्रियां गुलाब का इत्र और सुरमा बहुत लगाती हैं। वे अपने हाथ और पांव के नखों को मेहदी लगा कर लाल कर लेती हैं।

मेरूनी या मेरूनाइट लोग लेबनान के पश्चिमी भाग में रहते हैं। पाँचवों शताब्दी में मेरून नाम का एक संत यहां रहता था। उसके अनुयायी मेरूनी कहलाने लगे। इनका संगठन धार्मिक ढंग पर है। मुसलमानों के इन पर अधिक अत्याचार हुये। फिर भी इनका संगठन अटूट चला आता है। मेरून पुजारी मिल कर अपना बत्रक या बड़ा पुजारी चुनते हैं। बत्रक को बड़ा भारी अधिकार होता है। सभी ईसाई उसका आदर करते हैं। उसकी आज्ञा सब अनुयायी मानते हैं। यह लोग बड़े नम्र होते हैं। इनमें हत्या आदि घोर अपराध नहीं पाये जाते हैं।

देश दर्शन

सिरिया के अधिकांश लोग दो वर्गों शेख और सर्वसाधारण लोग में बँटे हुये हैं। शेख लोग बढ़िया कपड़े पहनते हैं और अच्छा भोजन करते हैं वे घोड़े की सवारी करते हैं और खुशहाल होते हैं। सिरिया के प्रायः सभी लोग सीधा सादा जीवन बिताते हैं। इनमें भोग विलास नहीं पाया जाता है। लोग कुछ गरीब हैं लेकिन भीख मांगने वालों की कमी है। लूटमार करने वाले भी कम हैं। सिरिया के प्रायः सभी भागों में यात्री निर्भय विचर सकता है। यहाँ के लोग अतिथि का सत्कार करने वाले होते हैं।

लेबनान के दक्षिणी ज़िलों और सूर (टायर) के बीच लगभग २०० गांवों में मेत्वाली लोग रहते हैं। ये शिया हैं। लेकिन इनके कुछ रीति-रिवाज ईरानी शिया लोगों से भिन्न हैं। इनकी संख्या प्रायः १ लाख है। वीर होने पर भी द्रूज़ लोगों से ये कुछ कमज़ोर होते हैं वे अतिथि की सेवा करते हैं लेकिन अजनबी लोगों को घर में नहीं आने देते हैं। वे समझते हैं कि अजनबी के आने से उनका घर अपवित्र हो जायगा। इसलिये वे यात्रियों के लिये विशेषघर मेन्साल (धर्म-



शाला) बनाते हैं। वे ईसाइ, द्रूज़ और दूसरे मुसलमानों के साथ खाने पीने और हुक्का गुड़गुड़ाने में परहेज़ नहीं करते हैं। मेत्वाली स्त्रियां बड़ी सुन्दर होती हैं इनके टोटीदार मिट्टी के बर्तन विचित्र होते हैं।

इस्मायली लोगों ने पहले कई ट्रिपली, लताकिया और हामा के पास कई पहाड़ी क़िलों पर अधिकार कर लिया था। इनकी संख्या ६०००० से घट कर अब केवल ५००० रह गई है। इनकी अन्सार्यों से शत्रुता थी। उन्हीं के एक दल ने इनके बहुत से लोगों को मार काट डाला शिगनानी या ज़िगानी लोग यहां के नट हैं।

धर्म

सिरिया में कई धर्मों के मानने वाले लोग रहते हैं। इनमें प्रधान इस्लाम यहूदी और ईसाई हैं।

अल् इस्लाम धर्म को ६२२ ई० में हज़रत मुहम्मद ने चलाया था जब वे मक्का से भाग कर मदीना (हिज्र करने) चले गये थे। इस्लाम धर्म का मूल सिद्धान्त है कि ईश्वर एक ही है और मुहम्मद अल्लाह

के रसूल हैं। (ला इलाह लिल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह)।

मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर ने आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, ईसा और मुहम्मद छः बड़े नबी दुनिया में भेजे। इनमें सबसे अन्तिम और सबसे बड़े हज़रत मुहम्मद हैं। उनका विश्वास है कि हर एक नबी ईश्वर का विशेष सन्देश लेकर संसार में आया। उसके बाद उससे बड़ा नबी दूसरा आवश्यक सन्देश लेकर आया। इस प्रकार मूसा के समय में यहूदी लोग सच्चा ईमान रखने वाले थे। मुसलमान लोग इसाइयों की इंजील और यहूदियों के गीतों की पुस्तक को सच्चा नहीं मानते हैं। उनके विश्वास के अनुसार केवल क़ुरान ही बनने के समय से अब तक शुद्ध और सच्चा चला आ रहा है। दूसरे धर्म-ग्रन्थों में अशुद्ध मिलावट कर दी गई है। मुसलमान लोग आत्मा को अमर मानते हैं। मरने के बाद प्राणी को दंड और पुरस्कार उसके कर्म के अनुसार नहीं वरन् ईश्वर की दया के अनुसार मिलता है। स्वर्ग (बहिश्त) भी ईश्वर की कृपा से



मिलता है। कुछ मुसलमान भाग्य (क़िस्मत) पर विश्वास रखते हैं।

मस्जिद का सबसे बड़ा पदाधिकारी बड़ा मुफ्ती होता है। मस्जिद में जो कुछ दान पुण्य का रुपया आता है उसका प्रबन्ध वही करता है। वही मस्जिद के दूसरे पदाधिकारियों को नियुक्त करता है। एक पदाधिकारी काज़ी या न्यायाधीश होता है। इमाम या मन्त्री प्रार्थना कराते हैं। खातिब या खतीब हर शुक्रवार (जुम्मा) को व्याख्यान देते हैं। मुअज्जिन मीनारों या बुर्जियों पर चढ़कर अज़ान देता है और मुसलमानों को प्रार्थना करने के लिये बुलाता है। इस्लाम धर्म मूर्ति का विरोध करते हैं। इसलिये मस्जिद में चित्रों और मूर्तियों की सजावट नहीं होती है। नमाज़(प्रार्थना), रोज़ा (उपवास), हज (तीर्थयात्रा), खैरात (दान) और वजू (स्नान) सभी मुसलमानों के लिये है। बड़ा रोज़ा (उपवास) रमजान के महीने में होता है। लेकिन मुसलमानों का साल चन्द्रमास मनाने के कारण केवल ३५४ दिन का होता है। इसलिये यह महीना भी आगे पीछे होता रहता है। कभी यह शीतकाल में पड़ता है कभी ग्रीष्म ऋतु में पड़ता है। नमाज़

पढ़ने से पहले वज़ू (स्नान) करना आवश्यक है। कपड़े भी पाक होने चाहिये और नमाज़ पढ़ने की जगह पर चटाई या कोई दूसरी चीज़ बिछी होनी चाहिये। मस्जिद में घुसने से पहले प्रत्येक मुसलमान अपने जूते वगैरह के पास दरवाज़े पर छोड़ देता है। अगर वह बिना स्नान किये आता है तो वह हौज़ के पास वज़ू करता है। इसके बाद मक्का की ओर मुँह करके वह नमाज़ पढ़ता है। शुक्रवार के दिन विशेष प्रार्थना होती है। इस दिन क़ुरान के कुछ अंश पढ़े जाते हैं और उनकी व्याख्या की जाती है।

दान पुण्य करना भी मुसलमानों का एक कर्तव्य है। रमजान के महीने में वे सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक उपवास रखते हैं। वे सूर्य उदय होने के पहले अंधेरे में और सूर्य अस्त होने के बाद रात में भोजन कर सकते हैं। अच्छे मुसलमानों का यह भी धर्म है कि वे अपने जीवन में एक बार मक्का और अरफात पर्वत की तीर्थयात्रा कर लें। सिरिया में रहने वाले अधिकतर मुसलमान सुन्नी हैं। कुछ शिया हैं। इसके अतिरिक्त उनके और कई कबीले और सम्प्रदाय हैं। इनमें एक

सम्प्रदाय द्रूज़ है। द्रूज़ सम्प्रदाय को अब से प्रायः १ हज़ार वर्ष पहले देज़्ज़ी नामी एक व्यक्ति ने स्थापित किया था। यह सम्प्रदाय इस्लाम की बातूनी (रहस्यमयी) भीतरी सिद्धान्तों को मानता है। ऐन अनूब द्रूज़ लोगों का प्रसिद्ध गाँव है। लेबनान के बेसूर गांव में भी प्रायः द्रूज़ लोग ही बसे हुये हैं। द्रूज़ लोगों की संख्या प्रायः ८०,००० है।

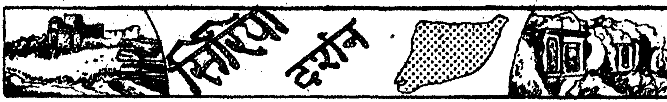
यहूदी

यहूदी लोग दो बड़े गिरोहों में बँटे हैं। सफरदिम स्पेन और पुर्तगाल से आये हुये हैं। अश्कनाज़िम पोलैंड, जर्मनी, रूस आदि कई देशों से आकर सिरिया और पेलेस्टाइन में बस गये हैं। कुछ यहूदी पेरूशीयम (फेरेसी) होते हैं। कुछ चसीदिम (पवित्र) होते हैं। इनके अतिरिक्त अलप्पो, बग़दाद, यमन, उत्तरी अफ्रीका के बहुत से यहूदी अरबी भाषा-भाषी होते हैं। कुछ यहूदी टिफलिस बोखारा, ईरान आदि पूर्वी भागों से आये हुये हैं।

यहूदियों का मन्दिर सिनागाग कहलाता है। सबाथ के दिन यहाँ धार्मिक व्याख्यान होते हैं और गीत पढ़े जाते हैं। हर सोमवार और गुरुवार को व्यवस्था सुनाई जाती है। यहूदियों का विश्वास है कि मूसा सोमवार के दिन ईश्वर से १० नियम (व्यवस्था) प्राप्त करने के लिये साइनाई पर्वत पर गया था और गुरुवार के दिन उन नियमों को प्राप्त करके नीचे उतर आया था।

ईसाई

ईसाई धर्म के मानने वाले अधिकतर बेरूत के पड़ोस में लेबनान प्रजातन्त्र में रहते हैं। ईसाई धर्म का आरम्भ अब से १९४२ वर्ष पहले हुआ था। ईसा ने बैतलहम में मरियम नाम की कुमारी कन्या के पेट से जन्म लिया था। प्रायः तीस वर्ष की अवस्था तक ईसा ने धर्म का प्रचार किया। यहूदी घर में पैदा होने पर भी ईसा यहूदियों के आडम्बर को बुरा भला कहता था। यह बात उन्हें पसन्द नहीं आई और उन्होंने रोमन



शासक के पास ईसा के विरुद्ध शिकायतें की। ईसा को शूली दी गई। लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि तीन दिन के बाद ईसा फिर जी उठा। ईसा के चेलों ने बड़े जोश से उसके धर्म का प्रचार किया और कुछ ही सदियों में प्रायः सारा योरुप ईसाई धर्म का मानने वाला हो गया।

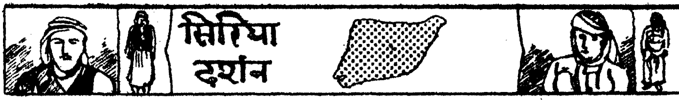
ईसाई धर्म के मानने वाले ईश्वर, पवित्र आत्मा और यीशु को मानते हैं। उनका विश्वास है कि यीशु ने शूली पर चढ़कर संसार के पापों को अपने ऊपर ले लिया। ईसाई लोग ईसा को ईश्वर का पुत्र कहते हैं। लेकिन वास्तव में ये यीशु (ईसा) को ईश्वर से भी बढ़ कर मानते हैं क्योंकि बिना यीशु की सहायता और कृपा से किसी की ईश्वर तक पहुँच नहीं हो सकती जो लोग ईसा पर विश्वास लाते हैं वे पापों से छूटकर मुक्ति पाने के अधिकारी हो जाते हैं। जो लोग ईसा पर विश्वास नहीं करते उन्हें मुक्ति कभी नहीं मिल सकती।

ईसाई धर्म में कई सम्प्रदाय हैं। रोमन कैथलिक और प्रॉटस्टेंट प्रधान धर्म हैं। रोमन कैथलिक पादरी विवाह नहीं करते हैं और गिरजे में मरियम और सेन्टों

(सन्तों) की भी मूर्तियाँ रखते हैं। रोमन केथलिक सम्प्रदाय १०६० में स्थापित हुआ। प्राटस्टेएट पादरी केवल बाइबिल को मानते हैं। पुराने गिरजे के मानने वाले रोमन केथलिक लोगों के समान ही पुरानी लकीर के फकीर होते हैं। इनकी व्यवस्था और भी पुरानी है।

कोप्ट ईसाई मुसलमानों के बीच बसते चले आ रहे हैं। उन्होंने अपनी कई प्रथाओं को परिस्थिति के अनुसार बना लिया है। सिरियन और आर्मीनियन ईसाई कई बातों में रोमन केथलिक लोगों के समान हैं।



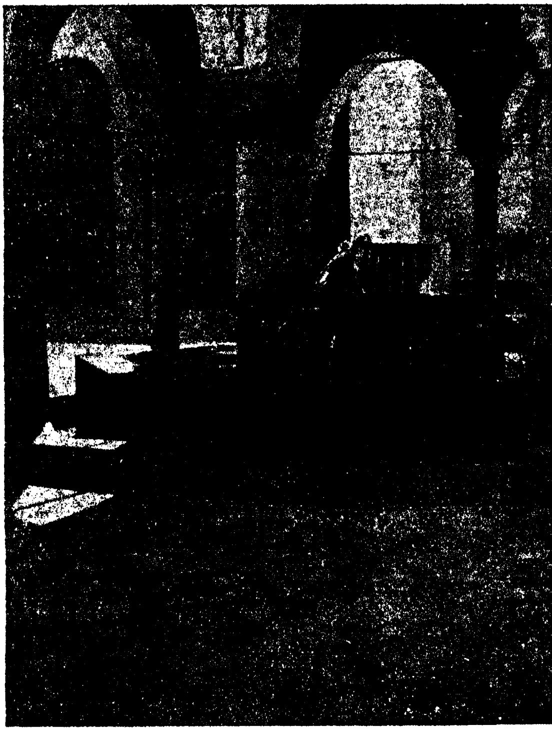


सिरिया के नगर और दर्शनीय स्थान

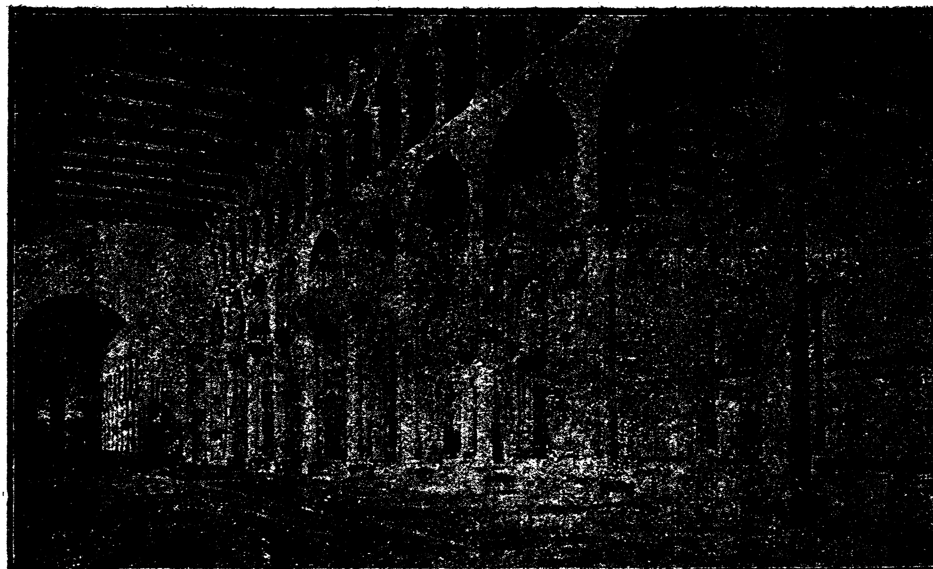
दमश्क सिरिया का सबसे बड़ा और सबसे अधिक प्रसिद्ध नगर है। इसका विशेष वर्णन यात्रा के अध्याय में दिया गया है।

पल्मायरा या तद्मोर नगर बड़ा पुराना है। तामार शब्द को हिब्रू (तामार) और अरबी भाषा में ताड़ का शहर कहते हैं इस नगर और भारतवर्ष तथा बेबिलान से व्यापार होता था। ईसा से ६४ वर्ष पूर्व यहां के धनी व्यापारियों को मार्क एण्टोनी ने लूटा था। २७२ ई० में रोमन लोगों ने इस नगर को घेर लिया और कुछ ही समय बाद विद्रोही नगर निवासियों से बदला लेने के लिये नगर को नष्ट कर दिया। आगे चल कर रोमन लोगों ने इस नगर को सुदृढ़ और सुरक्षित बना लिया। अन्त में मुसलमानों ने इसे छीन लिया। ओमैया और अब्बासी झगड़े ने नगर को तबाह कर दिया। १०८९ ई० में यहां एक भूचाल आया।

पल्मायरा नगर में सूर्य का एक विशाल मन्दिर था। यह मन्दिर कुछ लाल पत्थर और चूने के पत्थर



दमश्क की मसजिद दुनिया में अपनी सानी नहीं रखती। इसमें तीन बुर्ज हैं। भीतर पुरानी कारीगरी को देखकर यात्री मुग्ध हो जाता है, भीतर के आलीशान दृश्यों में से यह एक है।



दमश्क की जगत् प्रसिद्ध शाही मसजिद ।

का बना था जो इसके पड़ोस की खानों से ही निकाला गया। पहले यह मन्दिर पचास फुट ऊँची दीवारों से घिरा था। एक ओर की दीवार इस समय भी शेष है। इस दीवार में वर्गाकार खिड़कियां और छोटे दरवाज़े थे। पत्थर के कुलाबों पर झूलने वाला एक किवाड़ इस समय भी बना हुआ है। ऊपर जाने के लिये १२० फुट जीना है। इस मन्दिर के भग्नावशेषों से गाँव वालों ने अपने घर बना लिये हैं। फिर प्राचीन खम्भों, ताकों, आँगन और मूर्तियों का अनुमान किया जा सकता है। इसके पहुँचने के लिये १५०० खम्भों वाला मार्ग था। पल्मायरा की दीवारों का घेरा १२ मील था जो दक्षिण-पश्चिम से आरम्भ होकर पहाड़ के ढालों पर पूर्व की ओर चली गई थीं। आगे मुड़ कर वे मैदान में पहुंचती थीं। उत्तर की ओर किला है। इधर की दीवारें पहाड़ की चोटी पर बनी थीं।

प्राचीन मन्दिर के पश्चिम की ओर कई मुसलमानी मक़बरे हैं। इनके आगे एक छोटा सा नाला है जो पड़ोस में ही एक गरम गन्धक के सोते से निकलता है। यहाँ एक पुरानी वेदी बनी है। दक्षिण की ओर

नेक्रोपोलिस है। यहाँ पत्थर की गढ़ाई के बढ़िया नमूने हैं। एक मकबरा ८२ ई० में बना था। यह छःमञ्जिला मकबरा १०० फुट ऊँचा है। इसमें ४८० लाशों के गाड़ने का प्रबन्ध है। इन लाशों को लोग मिट्टी के ढांचे में रख कर उन पर ऐसा मसाला लगाते थे कि फिर वे बिना सड़े हुये सैकड़ों वर्षों तक ज्यों की त्यों रह सकती थीं।

किला मुसलमानी काल में बनाया गया। इसके सामने कई गड्ढे हैं जिनमें से बहुत सी पुरानी चीज़ें खोदी गई थीं। सूर्य-मन्दिर से कुछ दूर आगे खारी पानी की अस्सेबखा झील है। इसके आगे सब कहीं सिरिया का रेगिस्तान फैला हुआ है।

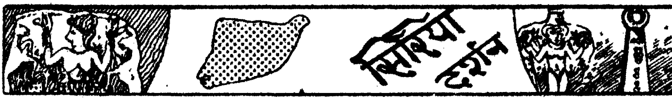
लेजा—लेजा का अर्थ है छिपने का स्थान। ड्रूज़ लोग इसे कलात अल्लाह (ईश्वर का दुर्ग) कहते हैं। यह स्थान बहते हुए लावा की धाराओं से बना है। वास्तव में यह एक प्राचीन और शान्त ज्वालामुखी पर्वत का मुख या क्रेटर है। इसका व्यास १ मील लम्बा है। इसमें कहीं कहीं १२५ फुट ऊँची लाखों और जमी हुई राख की दीवारें खड़ी हैं। इसके चारों

ओर ऊँची-नीची खुरदरी दीवारें उठी हुई हैं। यहाँ खड्डों और टीलों की प्राकृतिक भूलभुलैयां सी बनी हैं। तुर्क लोगों ने यहां बसने वाले लोगों को कभी ठीक ठीक नहीं दबा पाया। इसके ऊपर पठार में जगह जगह पर प्राचीन नगरों के खँडहर मिलते हैं। नीचे की छोटी घाटियाँ उपजाऊ हैं।

बुराक—लेजा के उत्तरी-पूर्वी सिरे पर स्थित है। यह इस प्रकार पत्थर पर बना है और पत्थर की दीवारों से घिरा है कि प्राकृतिक अजेय दुर्ग मालूम होता है। बुराक का अर्थ हौज़ है। इस समय भी यहां तीन हौज़ हैं। यहाँ ६००० मनुष्य रह सकते थे। इस समय पत्थर की मोटी दीवारों के खँडहर हैं।

अल्युस्यी—यहां प्राचीन फोनो नगर के खँडहर तीन मील तक फैले हुये हैं। खँडहरों से भी पुराने आलीशान महलों और भवनों का पता लग सकता है।

दाय—लेजा प्रदेश का प्रधान नगर दाय है। यहां ३०० घर हैं। एक घर के विशाल द्वार पर अंगूर की लता पत्थर को गढ़ कर बनाई हुई है।



जबील हारान—यह पहाड़ी प्रदेश है। यहाँ के अधिकांश निवासी द्रूज़ हैं। हेता (हित) पहला नगर है। यहाँ बहुत से भग्नावशेष हैं। कुछ घर पुराने समय के ही बने हैं। यूनानी और रोमन काल के मन्दिरों और लेखों की यहां भरमार है।

बाथनिया—हेता से तीन मील उत्तर-पूर्व की ओर बाथनिया का उजड़ा हुआ नगर है। यहां पत्थर के घर और जड़े हुये कूचे हैं। घरों के आंगनों में जङ्गली घास उगी हुई है। दीवारों की दरारों में भी घास उगी हुई है। इस समय यहाँ उल्लू और शृगाल निवास करते हैं।

शुका—चार मील और आगे है। यहाँ ईसाई और द्रूज़ पुराने समय के घरों में रहते हैं।

शुहबा (फिलिप्पो पोलिस)—रमणीक स्थान है। इसके दाहिनो ओर मैदान और बाईं ओर जङ्गल है। यहीं प्राचीन रोमन नगर था। रोमन मन्दिर, नाट्यशाला आदि अनेक स्थानों के खंडहर हैं।

कुनवात या कनाथ के खँडहर इसी नाम की घाटी में फैले हुये हैं। यहां महलों और मन्दिरों के अतिरिक्त टूटी हुई मूर्तियां भी मिलती हैं।

सुवेदह की घाटी में इसी नाम के प्राचीन नगर के खँडहर फैले हुये हैं।

हब्रान—यह जबील हारान की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ से २००० फुट नीचे केरिश्रो की घाटी है। पुराने घरों में कुछ द्रूज़ रहते हैं।

अल्कुफ्—एक पुराना नगर है। इसके घर भारी भारी पत्थरों के बने हैं। एक घर का बुर्ज इतना ऊँचा है कि कुछ दिनों तक इससे मस्जिद का काम लिया गया।

सलखद्—द्रूज़ लोगों का एक बड़ा गांव है। इसके पास ही प्राचीन नगर के खँडहर दो तीन मील तक फैले हुये हैं। यहां का क़िला मुसलमानी ढँग का बना है।

बोज़रह—रोमन शासनकाल में जार्डन नदी के पूर्वी किनारे पर बोज़रह में एक नामी किला था। क़िले की दीवारें १५ फुट मोटी और १३० फुट ऊँची हैं। एक सीधी सड़क शहर के आरपार जाती है। इसके



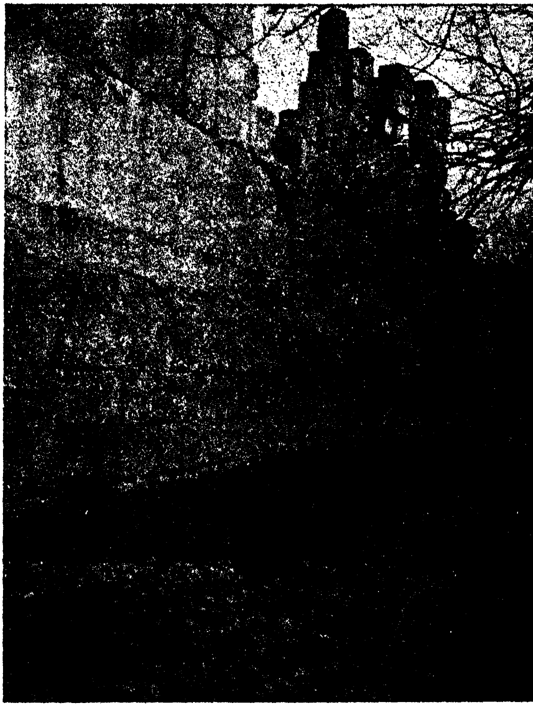
सिरों पर द्वार बने हैं। यहां यूनानी और रोमन समय के कई शिलालेख मिले हैं।

मज़रिब में पहले हारान प्रान्त का सूबेदार रहता था। यहीं से मक्का के लिये कारवां प्रस्थान करते थे। यहाँ मीठे पानी की एक झील है। इसमें मछलियाँ बहुत हैं।

अज़्र (जोरा)—लेजा के उठे हुये भाग में बसा होने से एक प्राकृतिक किला है। हजाज़ रेलवे यहां तक आती है। पुराने खँडहर तीन मील के घेरे में फैले हैं।

सुनामीन में भाग्यदेवी का पुराना मन्दिर है। यहां के घर कालेलावा के बने हैं।

अबीला—यह बरदा घाटी का एक पुराना नगर है। इसका ज़िक्र इसाइयों की इञ्जील में आया है। बालबक का प्राचीन नगर एण्टी लबनान की तलहटी में बसा हुआ है। यहाँ कई होटल और स्कूल हैं। नगर की जनसंख्या ५००० है। अधिकांश मतवाले मुसलमान और शेष केथलिक ईसाई हैं। यहाँ के लोग बाल-देव की पूजा किया करते थे। यहां देवताओं की पूजा करने के लिये निमरोद ने गगनचुम्बी स्तम्भ खड़े किये। यहीं



बालबक के पत्थर—यह संसार के सबसे बड़े मन्दिर के खण्डहर हैं। सबसे पहले यह बाल का मन्दिर था। यूनानियों ने इसी पर सूर्य का मन्दिर बनाया। रोमन लोगों ने इसी पर जुप्टिर का मन्दिर बनवाया। इसके बनवाने में प्रायः ३०० वर्ष लगे और १२०००० गुलामों ने काम किया। सबसे बड़े पत्थर की लम्बाई ६३ फुट, चौड़ाई ११ फुट और ऊँचाई १६ फुट है। उसका वज़न १००० टन है।

प्रसिद्ध राजा सुलेमान ने मन्दिर बनवाये। यूनानी लोग इसे हेलिओपोलिस (सूर्य नगर) कहते थे। यहीं उन्होंने विशाल सूर्य-मन्दिर बनवाया। रोमन लोगों ने वृहस्पति, बुध और शुक्रदेव के मन्दिर बनाये। यह विशाल त्रिदेव मन्दिर कई राजाओं की सहायता से बना। चौथी सदी में इसाइयों ने मन्दिर को तोड़ कर यहाँ गिरजा बनाया। ६३४ ई० में दमश्क लेने के बाद अरबों ने बालबक पर अधिकार कर लिया और मन्दिर से किले का काम लिया। ११३६ में अलप्पो के अमीर ने इसे जीत लिया। १४०० ई० में तैमूर के आदेश से फिर यहां विध्वंस हुआ और १७६५ ई० में भयानक भूचाल ने इसे और भी नष्ट कर दिया। बार बार नष्ट होने पर भी बालबक के भग्नावशेष ऐसी शान रखते हैं कि यात्री उन्हें देख कर आश्चर्य करने लगता है।

एक्रोपोलिस की लम्बाई ८८० फुट और चौड़ाई ४०० फुट है। अपनी शान के समय बरामदा १८० फुट लम्बा था। इसमें १२ विशाल खम्भे थे। मन्दिर का आँगन ४०० फुट लम्बा और ४०० फुट चौड़ा था। इसके चारों ओर बढ़िया कारीगरी की मूर्तियाँ और बर्जियाँ थीं।



बालबक नगर अपने प्राचीन सूर्य मन्दिर के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। इसके दूसरे सिरे पर एक सुन्दर पार्क और होटल है। यह चित्र इसी पार्क में लिया गया है। छोटा लड़का होटल का नौकर है। खड़ा हुआ मनुष्य सिरिया का एक अरबी है। बीच में 'भूगोल' सम्पादक हैं।

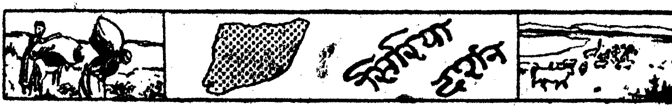
इस समय मन्दिर के केवल ६ स्तम्भ बचे हैं। यह खम्भे ६० फुट से अधिक ऊँचे हैं। पहले सब ५४ खम्भे थे। सत्रह सत्रह खम्भे अगल बगल में और दस दस खम्भे आमने सामने थे। यह सब खम्भे २९० फुट लम्बे और १६० फुट चौड़े विशाल भवन को घेरे हुये थे। पत्थर सीसे से जुड़े थे।

बेकस का मन्दिर कुछ छोटा है। इसकी दीवारें पहले से आधी ऊँचाई की रह गई हैं। इसमें ४६ खम्भे थे। इनमें १९ शेष बचे हैं। इनकी ऊँचाई साढ़े बावन फुट है। विशाल पत्थरों को देख कर आश्चर्य होता है कि वे इतनी ऊँचाई पर किस प्रकार चढ़ाये गये होंगे।

एक्रोपोलिस से ३०० गज पूर्व की ओर आधुनिक नगर के पास शुक्रदेव का मन्दिर है। इसका बाहरी भाग बड़ा सुन्दर है। इसमें फूल पत्ते पत्थरों को गढ़ कर बनाये गये हैं। नगर से आध मील दक्षिण की ओर पत्थर की खदान है। पुराने समय का एक विशाल पत्थर इस समय भी खुदा पड़ा है। पत्थर की मुटाई आदमी की ऊँचाई से अधिक है।

हाम्स—यह नगर ओराण्डीज़ के किनारे पर एक विशाल और उपजाऊ मैदान में बसा हुआ है। इसकी जन-संख्या ७०००० है। इसमें ३५,००० मुसलमान हैं। यहां डाक घर, तार घर और कई स्कूल हैं। पहले इसे एमीसा कहते थे। यहां के प्राचीन लोग डेरों में रहते थे। इन्होंने रोमन लोगों का घोर विरोध किया था। यहां का किला वृत्ताकार खाई से घिरा हुआ था। जब यहां के लोगों ने विद्रोह का झंडा उठाया तब तुर्की पाशा ने इसे बारूद से उड़ा दिया। एक पुराना दरवाजा इस समय भी बचा हुआ है। इस नगर के मुसलमानी विजेता सीदी खलीद की स्मृति में इसी नाम की मस्जिद बनी हुई है। बड़ी मस्जिद बाज़ारों के भीतर है। इसमें बढ़िया रेशम लगे हुये हैं।

हामा—यह नगर ओराण्डीज़ के किनारे एक सुन्दर स्थान पर बसा है। नदी के ऊपर चार पुल बने हुये हैं। हामा वड़ व्यापार का प्रधान केन्द्र है। यहां अबाबा या अरबी बुरक़ा अच्छा बनता है। यह नगर भी पुराना है। किले की पहाड़ी (जो ओराण्डीज़ के मोड़ के पास १३० फुट ऊँची है।) से नगर का सुन्दर दृश्य भली-



भांति देखा जा सकता है। तेरहवीं शताब्दी का प्रसिद्ध अरबी भूगोल-वेत्ता इसी नगर में पैदा हुआ था।

अलप्पो (हलब)—की जन संख्या ढाई लाख है। इनमें अधिकांश मुसलमान हैं। अनातूलिया बग़दाद रेलवे का प्रधान स्टेशन होने से इसका व्यापारिक महत्व पहले से भी अधिक बढ़ गया है। शहर एक ऐसे मैदान में स्थित है जो सब ओर से पहाड़ियों से घिरा है। यहां से ऊन, चमड़ा, जैतून का तेल और सूखे फल बाहर भेजे जाते हैं।

अलप्पो एक बहुत ही प्राचीन नगर है। पहले यहां हदाद देव को बलि चढ़ाई जाती थी। पल्मायरा के नष्ट होने पर रोमन काल में अलप्पो नगर की उन्नति होने लगी। १२६० और १४०१ में मंगोलों ने इस नगर को लूटा। १५१७ ई० में यह तुर्कों के अधिकार में आ गया। १८२२ में एक भयानक भूचाल ने नगर को नष्ट कर दिया। किला और घर नष्ट हो गये और दो तिहाई निवासी मर गये।

अलप्पो नगर छोटी छोटी ८ पहाड़ियों पर बसा हुआ है। शहर पत्थर की चार दिवारी से घिरा हुआ

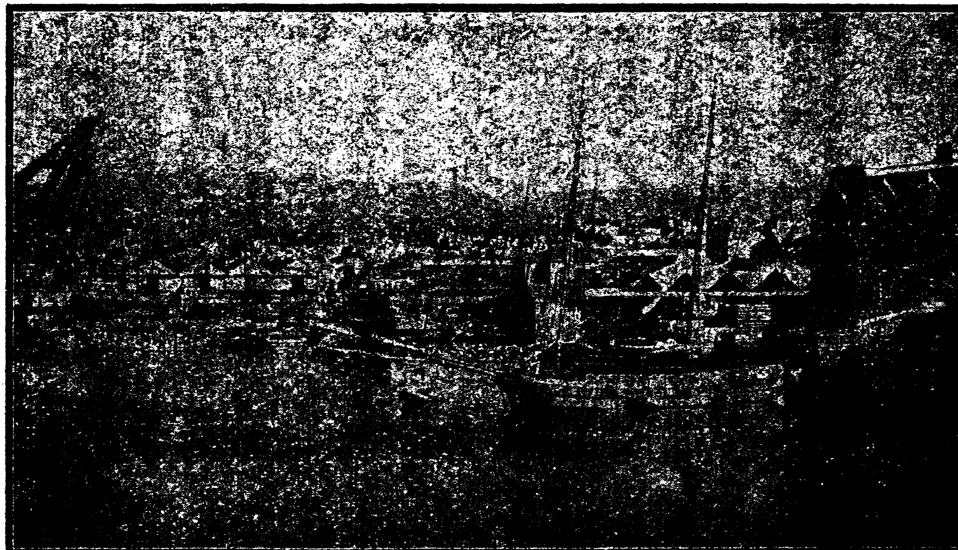
है। यह चार दिवारी मुसलमानी समय में बनी। इसकी खाईं भर गई लेकिन चार दिवारी के बुर्ज बने हुये हैं। चार दीवारी में सात दरवाजे हैं। किला एक पहाड़ी पर बना हुआ है। यह पहाड़ी शहर के बीच से आरम्भ होती है। किले के भीतर कुछ बहुत पुराने भग्नावशेष हैं।

बाज़ार नगर के बीच में है। कई स्थानों पर इकट्ठा थोक माल बिकता है। शहर में कई मस्जिदें हैं। जामे अल हेलबिया उस स्थान पर बनी है जहां पहले ईसाई गिरजाघर था। यहूदियों के बहसिता मुहल्ले में उनका एक सिनागदार मन्दिर है। अलप्पो के पड़ोस में कुछ ऐसे भग्नावशेष मिले हैं जिनका अब तक ठीक ठीक पता नहीं लग सका है।

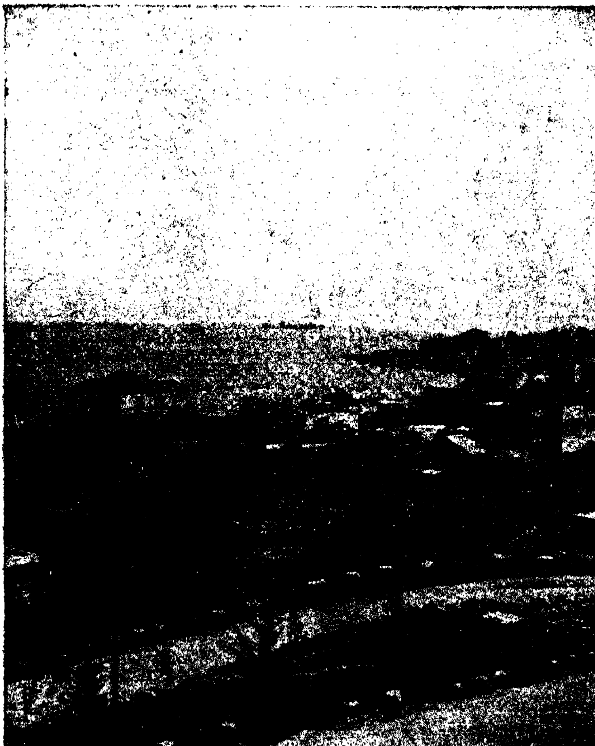
बेरूत—सिरिया का सबसे अधिक हरा-भरा नगर है। यहीं सिरिया का हाई कमिश्नर रहता है। जहाज से निकट आने पर बेरूत का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। कुछ गेरुआ रंग की चट्टानें और पहाड़ियां देव-दारु के पेड़ से ढकी हुई हैं। इन्हीं पेड़ों के बीच में दूर बसे हुये गांव दिखाई देते हैं। स्थल मार्ग द्वारा भारतवर्ष से योरुप को जाने वाले यात्रियों के लिये बेरूत प्रधान



बेरूत की एक सड़क। बेरूत में योरुप की तरह शानदार और आराम देने वाले होटलों की कमी है लेकिन पूर्वी भूमध्य सागर पर यही उत्तम बन्दरगाह है।



बेरूत का बन्दरगाह ।

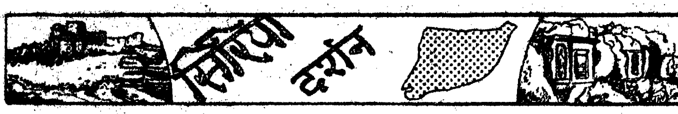


बेरूत की खाड़ी। नीचे भूमध्य सागर के सामने फलों के वृक्षों की हरियाली और जङ्गली फूलों की शोभा ने बेरूत की खाड़ी को आकर्षक बना दिया है।

बन्दरगाह है। यहां मिश्र यूनान और योरुप के दूसरे देशों के जहाज़ आते रहते हैं। पूर्वी भूमध्य सागर का बेरूत सर्वोत्तम बन्दरगाह है। यहां लगभग ५० करोड़ फ्रैंक का सामान बाहर से आता है और ३० करोड़ फैङ्क का माल बाहर जाता है। बाहर जाने वाले सामान में कच्चा रेशम, कपास, जैतून का तेल, फल, तिलहन, स्पंज और पशु प्रधान हैं। पक्का माल, लकड़ी, कहवा, चावल, मिट्टी का तेल आदि सामान बाहर से आता है। यहां के बाज़ारों और दूकानों में सभी तरह का सामान बिकता है।

कहा जाता है कि बेरूत की सिरिया भर में सबसे अधिक स्वास्थ्यकर जलवायु है। समुद्र की समीपता होने से वहां सरदी गरमी विकराल नहीं होने पाती। इसी से यहां के बगीचे हरे-भरे रहते हैं। फिर भी यहां की गरमी से बचने के लिये कुछ धनी निवासी अगस्त और सितम्बर महीनों में लेबनान पर्वत पर चले जाते हैं।

बेरूत के अधिकांश निवासी (डेढ़ करोड़) ईसाई हैं। इनमें शिक्षा का कड़ा प्रचार है। यहां कई स्कूल हैं। अमरीकन मिशन के १११ स्कूल सिरिया भर में



फैले हैं। अमरीकन यूनीवर्सिटी में अरबी गणित, पुरातत्व, वैद्यक, विज्ञान आदि विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती है। अमरीकन लोगों के अतिरिक्त यहां ब्रिटिश इटेलियन यहूदी आदि कई मिशन शिक्षा, ईसाई धर्म और योरुप की सभ्यता का प्रचार करते हैं।

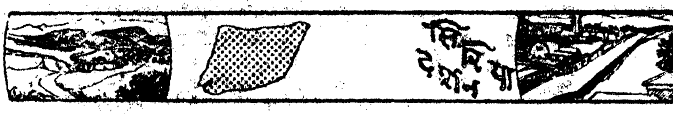
पुराने समय में बेरूत बाल देव की पूजा का प्रधान स्थान था। इसी (बाल-बेरिथ) से बिगड़ कर शहर का नाम बेरूथ या बेरूत पड़ा। फोनिशियनकाल में यह एक बड़ा व्यापारी नगर था। स्ट्राबो, टालेगी आदि प्राचीन इतिहास लेखकों ने बेरूत को अपने अपने समय में प्राचीन नगर बतलाया। ईसा से १४० वर्ष पूर्व यह नगर गृह-कलह में नष्ट हो गया। आगे चल कर यहां रोमन उपनिवेश बना। लाल और भूरे पत्थरों के बहुत से रोमनकालीन भग्नावशेष यहां मिलते हैं। १८३९ में यहां के तुर्की सूबेदार ने बन्दरगाह के खम्भे बनवाये लेकिन १८४० के तूफान में वे नष्ट हो गये। बेरूत के म्यूनिसिपल भवन में अजायबघर है। यहाँ फोनीशियन काल की बहुत सी दर्शनीय वस्तुयें रक्खी हैं।

यहां की बड़ी मस्जिद सेंट जान गिरजे को तोड़

कर उस समय बनाई गई जब ईसाई स्वयंसेवकों की फौजें अपने धार्मिक स्थानों को मुक्त करने के लिये यहां मुसलमानों से लड़ने आती थीं। कुछ अन्य छोटी छोटी मस्जिदें भी इसी प्रकार बनीं। ईसाई गिरजे यहां बहुत हैं।

यहां का बाज़ार कुछ योरुपीय और कुछ पूर्वी ढंग का है। सड़कें चौड़ी हैं, उनमें रात को रोशनी होती है। वे रात को ही धोई जाती हैं जिससे चलने वालों को कष्ट न हो।

सैदा—(सीडान) यह एक अन्तरीप पर बसा हुआ है जो पहले समुद्र में डूब जाती है फिर एक द्वीप के रूप में ऊपर निकलतो है। यह द्वीप आठ महराब वाले एक पुल द्वारा प्रधान स्थल से जुड़ा हुआ है। नगर बहुत विषम रूप से बसा है। इसकी गलियां बहुत ही तङ्ग (पांच से आठ फुट चौड़ी) हैं। इससे दोनों ओर बने हुये घरों की छतें अक्सर एक दूसरे को छू जाती हैं। इसके पड़ोस में नींबू, नारंगी, बादाम, केला, खुबानी और छुहारे के बड़े बड़े बगीचे हैं। इसकी जनसंख्या १३५०० है। इसमें ११,००० मुसलमान और १७०० इसाई हैं। इसके पड़ोस को चट्टानों से बहुत



से फोनीशियन भग्नावशेष मिले हैं। यहाँ एक बड़ी सराय और कई स्कूल हैं। सैदा फोनीशियन लोगों का प्रधान नगर था। यहाँ ईसा से १५०० वर्ष पूर्व के कुछ शिलालेख और ईसा से १३०० वर्ष पूर्व के मिस्री होमर ने इस शहर का कई बार उल्लेख किया है। सुलेमान (सालोमन) के समय में सैदा वासियों से बढ़ कर इस ओर अन्य कारीगर न थे। टायर नगर की तरह यह एक स्वाधीन नगर था। कुछ समय यहाँ बेबिलान का राज्य रहा। इसके बाद यहां पारसियों का शासन हुआ। ईसा से ३३० वर्ष पूर्व इस नगर ने सिकन्दर महान का स्वागत किया। यूनानियों के बाद यहां रोमन लोगों का राज्य हुआ। यहाँ ईसाइयों और मुसलमानों की बार-बार मुठभेड़ हुई। १२६१ में पूर्ण-रूप से यहाँ मुसलमानों का अधिकार हो गया। सत्रहवीं सदी में अमीर फखरुद्दीन ने यहां अपना महल बनवाया और फ्रांसीसी व्यापारियों को बसने और व्यापार करने के लिये प्रोत्साहित किया। फ्रांसीसी विद्रोह के समय फ्रांस वाले यहाँ से निकाल दिये गये। १८४० में जब मिस्री पाशा ने यहाँ अपना अधिकार जमाया तब फ्रांस,

ब्रिटेन और टर्की के संयुक्त जहाजी बेड़े ने यहाँ गोलाबारी की। इससे यहां का क़िला नष्ट और बन्दरगाह हो गया। खान फ्रांसवी नाम के क़िलेनुमा खंडहर अबू नखलह मस्जिद के उत्तर में हैं। यह मस्जिद सेएट माइकल गिरजे को तोड़ कर बनाई गई थी। पुराने महल में इस समय मुस्लिम स्कूल हैं। नगर से पौन मील दक्षिण की ओर चूने की पहाड़ियों के ऊपर यहां का जीर्ण दुर्ग (नेक्रोपोलिस) है। यहां यहूदियों का तीर्थ और कई प्राचीन भग्नावशेष हैं।

टाइर—(हिब्रू भाषा का तज़ोर और अरबी का सूर है।) का अर्थ है चट्टान। इस नगर में ५००० मनुष्य रहते हैं। यह नगर बगीचों से घिरा हुआ है। पड़ोस में पुराने समय के भग्नावशेषों की भरमार है। नगर में कई स्कूल और कचहरी है। यहीं अरबी सूबेदार फ्रान्सीसी सूबेदार रहता था। इस समय ब्रिटेन का फौजी शासन है। यहां का बन्दरगाह उसी स्थान पर है जहां पहले फोनिशियन व्यापारियों का बन्दरगाह था। कहते हैं कि यह नगर ईसा से २७५० वर्ष पूर्व बसाया गया था। ईसा से १५०० वर्ष पूर्व यह नगर बहुत ही

फला फूला था। इस समय जिस द्वीप पर टापूर नगर बसा है वहां पहले बृहस्पति देव का मन्दिर था। द्वीप एक दूसरे से और प्रधान स्थल से पुल द्वारा जुड़े हुये थे। पुल के ऊपर से ही एक नाली द्वारा रासुल ऐन का मीठा पानी आता था।

ईसा से ७२५ वर्ष पूर्व से यहां बेबिलान के हमले होने लगे। इसी से ३३३ वर्ष पूर्व सिकन्दर महान ने टाइर नगर पर अधिकार कर लिया। इसके बाद रोमन और फिर मुसलमानों का राज्य हुआ।

त्रिपोली या त्रिपुर (तीन नगर)—वास्तव में दो नगरों से बना हुआ त्रिपोली का एक प्रधान नगर है। जिसमें बाज़ार है। दूसरा अलमीना है जहां बन्दरगाह है। त्रिपोली दो पहाड़ियों की तलहटी में बसा हुआ है। इनके बीच में खादिश है जहां से बगीचों को सींचने के लिये पानी पहुँचता है। त्रिपोली से अलमीना को ट्रैम जाती है। नगर सुन्दर है लेकिन इसकी गलियां बहुत ही तंग और घुमावदार हैं। इसका बन्दरगाह सुरक्षित नहीं है। जहाज लंगर डाल कर ही ठहर सकते हैं। प्रकाश भवन (लाइट हाउस) से द्वीप का सुन्दर दृश्य

दिखाई देता है। त्रिपोली से हाम्स तक रेलवे खुल जाने से नगर का व्यापार बढ़ गया है। नगर की जन-संख्या ३६००० है जिनमें २३,००० मुसलमान हैं। त्रिपोली के बाज़ार बड़े मनोहर हैं। नगर के दक्षिण में पुराना किला है। यहाँ प्राचीन भग्नावशेषों की अधिकता है। नगर की मस्जिदों में जाने के लिये इमाम की आज्ञा लेनी पड़ती है। त्रिपोली के पास ही अल् हदवी में एक पवित्र गोल सरोवर है। यहां मछलियां बहुत हैं।

तारतूस (तोर तोसा)—में बहुत कम लोग रहते हैं। ये लोग क्रूसेडर ईसाई योद्धाओं के पुराने किले में रहते हैं। यह किला तीन ओर दोहरी दीवारों और खाइयों से घिरा हुआ है। खाइयां चट्टानों को काट कर बनाई गई थीं। चौथी ओर समुद्र है। प्रधान द्वार उत्तर-पूर्व की ओर है। लताकिया की वर्तमान जन संख्या २०,००० है। फोनिशियन समय में यह एक प्रसिद्ध व्यापारी नगर था। इस समय यह उत्तरी सिरिया का एक बड़ा नगर है। इसके उत्तर में धुर उत्तरी सिरे पर एलग्ज़ेंड्रोटा इस्कन्दरून एक साधारण नगर है। इसकी जन-सख्या केवल १५,००० है।



मेरी विदेश-यात्रा

१

बग़दाद से दमश्क़ लगभग साढ़े पांच सौ मील दूरी है। जितनी दूर इलाहाबाद से कलकत्ता है उतनी ही बग़दाद से दमश्क़ है। लेकिन इधर के बीहड़ रेगिस्तान में अब से तेरह वर्ष पहले कोई अकेले दुकेले सफर करने का नाम नहीं लेता था। १९२१ ई० में ब्रिटिश हवाई जहाजों ने यहां का चक्कर लगाया। तब से हवाई जहाजों का यही रास्ता बन गया। दो वर्ष बाद बग़दाद में सोने का भाव बहुत बढ़ गया। इससे लाभ उठाने के लिये सिरिया (शाम) के कुछ उत्साही सौदागर दो मोटर कार बग़दाद को दौड़ा लाये। इन्हें देख कर बग़दाद के लोग दंग रह गये। आज कल इस तरह बाहर से इराक़ में सोना लाने की मनाही है लेकिन इन दो सौदागरों ने मार्गहीन मरुभूमि में सब के लिये रास्ता खोल दिया। इसके कुछ ही समय बाद इराक़ की सरकार ने सिंचाई के लिये अमरीका से एक भारी मशीन मँगाई। वह पोर्ट सईद में उतारी गई। उसको लेने के लिये एक

सरकारी नौकर गया। एक लारी पर मशीन लादी गई। दूसरे मोटर पर सवार होकर वह बग़दाद आ पहुँचा।

फिर तो सब को विश्वास हो गया कि इस ओर मोटर चल सकते हैं। सबसे पहले नेरन मोटर कम्पनी खुली। कुछ मुसाफिर सफर करने लगे। आजकल कई मोटर कम्पनी मोटर चलाती हैं। साल में लगभग दस हज़ार यात्री इस खुश्की के रास्ते से सफर करते हैं। हफ्ते में दो बार मोटर और लारियों का काफ़िला चलता है।

मेरा मोटर सामान, पानी❀ और मुसाफिरों को लादकर सबेरे ही बग़दाद चल पड़ा। शहर छोड़ने के पहले मोटर पुलिस के दफ्तर में हाज़िरी देने गया। यहां हर मुसाफिर को दो दो आने चुङ्गी के देने पड़े। इस रस्म को अदा करने में देर न लगी। मोटर बाहर हुआ। कुछ ही मील चलने के बाद खुश्क रेगिस्तान के दर्शन होने लगे। हमारा मोटर दजला नदी को छोड़ कर फरात नदी के सीध में सीधा जा रहा था। यह द्वाबा की ज़मीन

❀इस लम्बी निर्जल यात्रा के लिये मुसाफिर लोग छागलों में पानी भर कर मोटर पर लटका लेते हैं।

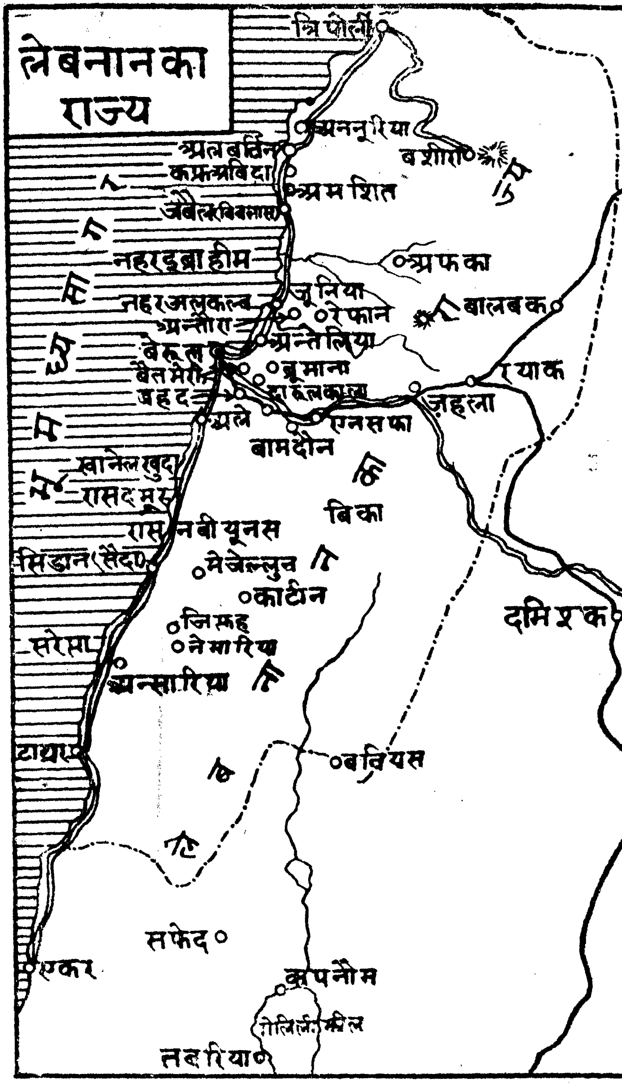
दक्षिणी-पश्चिमी पंजाब से भी अधिक खुश्क थी। कहीं कहीं बद्दू लोगों के डेरे मिलते थे। खेत बहुत कम थे। फ्लूजा के पास फरात नदी का पुल बना। इधर बहुत हरा-भरा था। सब कहीं गेहूँ के खेत थे। किले के पास छुहारे के बगीचे थे। हमारी सड़क नदी के किनारे किनारे जा रही थी। दृश्य बड़ा सुहावना लगता था। लगभग तीन घंटे में हम लोग रमादी पुलिस स्टेशन में पहुँच गये। यहां पासपोर्ट और सामान की जांच हुई। यहाँ काफी देर लगी। मुसाफिर लोग चाय पानी करने लगे। पानी के अकेले नल पर बड़ी भीड़ थी। सभी लोग पानी के आखिरी अड्डे से पूरा लाभ उठाना चाहते थे।

रमादी के आगे असली रेगिस्तान था। सब कहीं चपटी ज़मीन थी। बहुत दूर दाहिनी और बाईं तरफ नंगी और छोटी पहाड़ियां थीं। लेकिन ज़मीन धीरे धीरे ऊँची हो रही थी। इसी से दोपहर की कड़ी धूप भी असह्य नहीं मालूम होती थी। हरियाली या पानी का कहीं नाम न था। हाँ, बहुत दूर क्षितिज के पास बहुत ही साफ पानी समुद्र सा मालूम होता था। मोटर कितना ही मुड़े या बढ़े यह बनावटी पानी उतने ही फासले

पर रहता था। यह वास्तव में मृगतृष्णा या मरीचिका थी। अपने देश में प्यासे हिरण ऐसे ही पानी को तलाश में अपनी जान खो बैठते हैं। शायद इसी से इसका नाम मृगतृष्णा पड़ा।

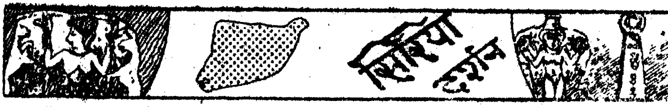
इस अपार रेगिस्तान में काफी बड़ी ज़मीन थी। उसके ऊपर ताँबे के रंग के छोटे छोटे कंकड़ बिछे हुये हैं। इधर मोटरों के एक दूसरे के टकराने का ज़रा भी डर नहीं है। रेगिस्तानी सड़क बीसियों मील चौड़ी है। कोई कोई मोटर हमारे मोटर से एक आध मील दाहिनी ओर कोई बाईं ओर को चलते थे किसी मोड़ के पास मेल हो जाता था। अब सब को अपने अपने पानी की छागलों की क़द्र जान पड़ी। धूप में आराम करने का किसी ने नाम भी न लिया। सब लोग मोटर में बैठकर चलने के लिये तैयार हो गये।

फिर वही सुनसान रास्ता नया रेगिस्तान था। आदमी, जानवर, या पेड़ कहीं देखने को नहीं मिलते थे। यहाँ तक कि मक्खी और कौए भी दिखाई नहीं देते थे। कहीं कहीं एक आध मरे और सूखे हुये ऊँट का ढाँचा पड़ा मिल जाता था। उसके मांस खाने वाले

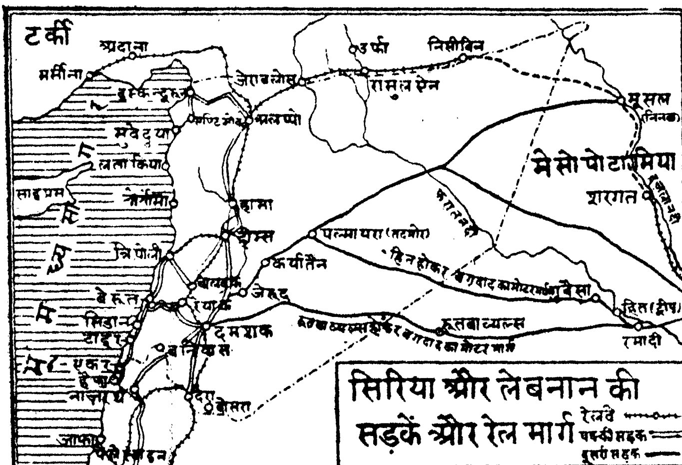


लेबनान का राज्य
त्रिपोली
बशीरी
अमशित
नहर इब्राहीम
अफका
जूनिया
रेफाने
बालबक
अन्तेलिया
बेरूत
रयाक
ज़हला
एनसफा
बामदोन
बिका
रासनबी यूनस
सिडान (सैदा)
मेजेल्लुन
काटीन
जिस्रह
नेमारिया
दमिश्क
टायर
बनियस
सफेद
एकर
कपनौम
गेलिली झील
तबरिया

गिद्ध या गीदड़ न थे। वह जहाँ का तहां पड़ा रहता। उसकी कुछ खाल सूख कर टूट पड़ती और हवा में इधर उधर उड़ आती। नीचे सफेद हड्डियां दिखाई देने लगतीं। लेकिन उसको खबर लेने वाला कोई न था। शायद कभी किसी काफले वाले या बद्दू अरब ने तंग आकर अपने पुराने साथी को यहां छोड़ दिया होगा और उसके पेट के पानी से कुछ समय के लिये उसने अपनी प्यास बुझाई होगी। एक आध जगह मोटर वालों के छोड़े हुये खाली पीपे पड़े मिलते थे। एक दो जगह हवाई जहाज़ को रास्ता दिखलाने के लिये विचित्र सफेद निशान थे। इनके सिवा इस निर्जन प्रदेश में मनुष्य का और कोई निशान न था। शायद एक जगह मुझे अजीब तरह की छिपकली मिली थी। कई घंटे इसी तरह लगातार निर्जन रेगिस्तान में चलने के बाद रुतबा व्यल्स स्थान आया। यहां पुलिस की चौकी और मुसाफिरों को आराम करने के लिये कुछ कोठरियां हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि दो ढाई सौ मील के सफर में यहाँ पानी देखने को मिलता है। पानी हाथ के नल से निकलता है। पानी को देखा कि सब की जान में जान आई।



यहाँ मोटर लगभग सवा घंटे तक ठहरा। सब लोगों ने हाथ मुँह धोया, भोजन किया और खूब पानी पिया। इसके बाहर बद्दू लोग टूटी टीन और ऊन के डेरों में

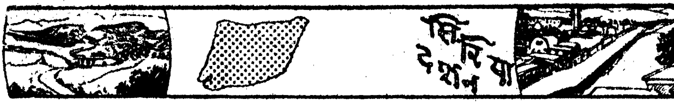


पड़े मिले। इसके बाद फिर वही सुनसान रेगिस्तान था। कुछ ही देर में रात हो गई। हम लोगों की आवाज़ के सिवा और कोई दूसरी आवाज़ भी सुनने को नहीं मिलती थी। मोटर में सभी लोग अरबी बोलते थे। इसमें दो यहूदी कुछ अँग्रेज़ी जानते थे। उनसे मेरी कभी कभी बातें हो जातीं। जब मोटर तेज़ चलता तो रेगिस्तान में

पड़ी हुई कंकड़ियां मोटर में लगकर जोर की आवाज़ करतीं। लोग हँसी में कहने लगे "देखो बद्दू गोली छोड़ रहे हैं"। कभी कभी सचमुच बद्दू लोग हमला कर देते हैं। उनको रोक के लिये हथियार बन्द सांढ़िनी सवार पानी के पड़ोस में चक्कर लगाया करते हैं।

रात को कड़ाके का जाड़ा पड़ने लगा। मैंने मोटर ड्राइवर से कम्बल निकलवाने के लिये कहलवाया। यहूदी ने मेरी बात ड्राइवर को अरबी में समझाकर मुझ से कहा—"आप हमको दुभाषिये के काम के लिये क्या देंगे?" मैंने उत्तर दिया "जब आप हिन्दुस्तान में आवेंगे तो मैं यही काम आप के लिये कर दूंगा" इस पर यहूदी ने कहा—जब हिन्दुस्तान आज़ाद हो जायगा तब मैं वहाँ आऊँगा।

मई का महीना था कई गरम कपड़े पहनने और कम्बल ओढ़ने पर भी रेगिस्तान में रात में जाड़ा नहीं जाता था। आज सारी रात का सफर था। बीच में मोटर के रुकने के लिये कोई पड़ाव नहीं है। सब को बैठे बैठे ही रात काटनी पड़ी। सबसे अधिक ज़ोर ड्राइवर पर पड़ा। उस विचारे को दिशा का ज्ञान रखना और



फिर लगातार मोटर चलाना था। रात भर में सिर्फ़ एक दो बार उसने ज़रा देर की झपकी ले पाई थी।

दूसरे दिन अँधेरे में ही सिरिया की सीमा आ गई। सीमा की पुलिस एक किले बन्द मकान में थी। चारों ओर सब कहीं खुश्क और उजाड़ पहाड़ियां थीं। यहां सब के पासपोर्ट की जांच हुई। हम लोग फिर चल पड़े। एक दो जगह ऊँट पर सवार फ्रान्सीसी सरकार के देशी पहरेदार थे। पहाड़ी भाग से नीचे उतरने पर दृश्य ही बदल गया। सब कहीं हरा भरा था। घाटी में जौ और गेहूँ के खेत थे। बीच बीच में ठंडा और साफ पानी बहता था। वीरान जगह बहुत कम थी। ऊँचे भागों में ज़ैतून और दूसरे फलों के पेड़ थे। अब गांव भी बहुत मिलने लगे। सड़क एक दम पक्की थी। सड़क के किनारे किनारे तार भी लगा था। वास्तव में यह सिरिया का विस्तृत नखलिस्तान था। इसी के बीच में दमश्क शहर स्थित है। थोड़ी देर में आलीशान मकान और सुन्दर बगीचे नज़र आने लगे। बहुत से लोग फल और तरकारियों का बोझ गधों पर लादे हुये एक किनारे से जा रहे थे। सड़क की दूसरी तरफ ट्राम्वे गाड़ी चल

रही थी। हम सब लोग समझ गये दमश्क शहर दूर नहीं है। थोड़ी देर में गाड़ी शहर के बीच में होती हुई अपने अड्डे पर आ पहुँची। यहाँ ठेलों और कुली लोगों की भीड़ थी। एक ठेले पर सामान लदवा कर मैं एक होटल में पहुँचा।

दमश्क

जो स्थान हमारे देश में दिल्ली का है वही स्थान सिरिया (शाम देश) में दमश्क का है। यहां के लोगों का विश्वास है कि दमश्क दुनिया भर में सबसे पुराना शहर है। इसमें कोई संदेह नहीं कि मेम्फिस (मिस्र) निनवा और बगदाद उसके सामने बच्चे थे। कब इसकी नींव पड़ी। इसका ठीक ठीक पता नहीं लग सकता। इब्राहीम इधर होकर गुजरा था इसका उल्लेख इसाइयों की बाइबिल में मिलता है। कुछ सदियों के बाद अरमियाई लोग अरब की ओर से चल कर यहां डट गये। सुप्रसिद्ध सुलेमान के मरने के बाद यहाँ बड़ी गड़गड़ी मची। सिकन्दर महान ने ईसा के पूर्व ३३२ में बिना लड़े ही दमश्क पर अधिकार कर लिया। पर उसके



मरने पर मिश्र में टालेमी (Ptolemy) और पूर्व की ओर सिल्यूसिड उसके उत्तराधिकारी हुये। ये दोनों एक दूसरे से अक्सर लड़ते थे। सिरिया या शाम देश इन दोनों का युद्ध-स्थल बन गया। अब से लगभग २ हजार वर्ष पूर्व रोमन लोग यहाँ राजा हो गये। इसी समय ईसाई धर्म फैलने लगा। ६४५ ई० में अरब लोगों ने दमश्क पर हमला किया। कुछ ही समय में उनका राज्य सारे सिरिया (शाम) देश पर हो गया। खलीफा लोगों ने दमश्क को ही अपने विशाल साम्राज्य की राजधानी बनाया। इसाई और मुसलमानों में इधर लगातार लड़ाई होती रही। तेरहवीं सदी के अंत में मङ्गोल सरदार लोगों ने अपने लड़ाका तारतारी लोगों को साथ लेकर सिरिया पर हमला किया। ईसाई या मुसलमान या दोनों मिलकर इन खूंख्वार लोगों का मुकाबिला करने में बिलकुल असमर्थ थे। लगभग १४०० ई० में तैमूरलंग ने यहाँ हमला किया। बड़ी लूट मार मची। महल गिरा दिये गये, खजाने लूटे गये। पुस्तकालय जला दिये गये। दिल्ली की तरह दमश्क में भी क़त्ल आम हुआ। हर एक दमश्क निवासी तलवार के घाट उतारा गया। लेकिन

६

तलवार और कवच बनाने वालों की जान उसने छोड़ दी। उन्हें वह अपने साथ समरकन्द ले गया। सोलहवीं सदी के आरम्भ में तुर्क लोगों ने सिरिया पर अधिकार कर लिया। ३० सितम्बर १९१८ को बड़ी लड़ाई के अंत में सिरिया में तुर्की राज्य का भी अन्त हो गया। आजकल यहां फ्रान्सीसी मेंडेट (राज्य) है।

स्नानादि से छुट्टी पाकर मैं शहर देखने चला। दमश्क में साधारण लोगों की भाषा अरबी है। पढ़े लिखे लोग फ्रान्सीसी बोल लेते हैं। मुझे दोनों ही भाषाओं का अत्यन्त कम ज्ञान था। इसलिये मैंने गाइडबुक और और नक्शा साथ लिया। मेरे एक यहूदी साथी ने मेरे लिये एक अरबी गाइड (पथ प्रदर्शक) तय कर दिया। यह अँग्रेज़ी में कोरा था लेकिन वह बड़ा ही लोभी और लुटेरा था। उसने एक एक फर्लांग के लिये घोड़ा गाड़ी किराये पर करवाई और गाड़ी वाले से कमीशन लेकर मुझसे मनमाना किराया दिलवाया। कुछ ही समय में सिरिया के फुटकर सिक्के (पियास्टर) समाप्त हो गये। नोट भुनाने की नौबत आई। यहां थोड़ी दूर पर नोट या पियास्टर तुड़ाने वालों (Money Changers) की



छोटी छोटी दुकानें हैं। पर इन दूकान वालों से यात्री को बड़ा सावधान रहना चहिये। ये लोग बड़े ठग होते हैं। मेरे गाइड ने मुझे ठगाने की भरसक कोशिश की। पर मुझे शक हो गया। इसलिये मैं चौकन्ना हो गया। मैंने उससे कहा कि सीधे होटल चलो दूसरी चीजों को फिर देखेंगे। इस तरह से इस गाइड से पीछा छुड़ाना था। अन्त में भी जितना तय हुआ था उससे कुछ अधिक मैंने उसे दिया। फिर भी वह झगड़ा करने लगा। दैव योग से यहाँ एक अँग्रेजी जानने वाले सज्जन थे। उन्होंने उसे अरबी में डांटा। तब कहीं वह होटल से बाहर गया।

दमश्क शहर में यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के अलग अलग मुहल्ले बसे हुये हैं। यहूदी मुहल्ला दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसके उत्तर में इसाइयों का बड़ा मुहल्ला है। लेकिन मुसलमानी मुहल्ला अधिक दिलचस्प है। इनके मकानों की छतों से छज्जे इतने बाहर निकले रहते हैं कि धूप से अक्सर बिल्कुल छिप जाते हैं। इनकी गलियां बहुत तंग हैं। खिड़कियों में जाली-दार काम है इससे इनके घरों के लोग बाहर वालों को आसानी से देख सकते हैं लेकिन बाहर वाले भीतर

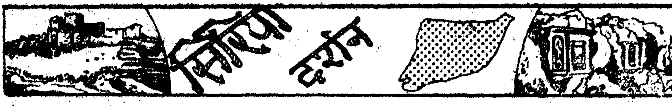
वालों को बिल्कुल नहीं देख पाते हैं। शहर में एक सिरे से दूसरे सिरे तक ट्रामगाड़ी चलती है। थोड़ी थोड़ी दूर पर ठंडे पानी के नल हैं। नल के साथ एक जंज़ीर से छोटा गिलास या प्याला बँधा रहता है। रास्ता चलते लोग इसी में पानी लेकर पीते हैं। मुझे उनके जूठे पानी से पानी पीना पसंद न था। जब मैंने एक जगह चुल्लू से पानी पिया तो यहाँ के लोग ताजुब से मेरी ओर देखने लगे।

दमश्क के बाज़ार दुनिया भर में मशहूर हैं। इनमें हर रोज़ दिन भर भीड़ लगी रहती है। दमश्क के बाज़ार बहुत लम्बी सड़कों या गलियों में लगे हुये हैं। वे ऊपर से छाई हुई हैं। एक सड़क पर एक ही तरह के सामान की दूकानें दोनों ओर लगी हुई हैं। कोई बाज़ार बरतनों का है, किसी में चमड़े का सामान है। किसी में रस्सी और टोकरी हैं। किसी में अनाज और खाने का सामान है। किसी में टोपी और कपड़े हैं। गलियों में ताज़े फल तरकारी और दूसरी चीज़ों से लदे हुये गधे और ऊँट इधर उधर चलते रहते हैं। उनके मालिक तरह तरह की आवाज़ लगाकर अपना सामान

बेचते रहते हैं। माड़ पर आम अनपढ़ लोगों के लिये चिट्ठी लिखने वाले, मुहर तयार करने वाले और भाग्य की बातें बताने वाले बैठे रहते हैं। रंगीन शरबत बेचने वाले तसला या कटोरा बजाकर शीरीं जबां में गाते हुये अपना शरबत बेचते रहते हैं। वे एक ही कटोरे से सब को शरबत पिलाते हैं और उसे धोने का नाम नहीं लेते हैं। इन गलियों में अरब, तुर्क, यहूदी, आर्मेनियन, यूनानी, फिरंगी आदि दुनिया के सभी लोग घूमते मिलते हैं। जेवर का बाज़ार काफी चौड़ा है। वह चारों तरफ से घिरा हुआ है। उसके दरवाजे पर एक हथियार बन्द पहरेदार भी रहता है अन्दर यहूदी और दूसरे सुनार अपने अपने जेवरों को सेफ (फौलादी सन्दूक) में बन्द किये ऊँची कुर्सी पर बैठे रहते हैं। ग्राहक को देखकर सभी उसे अपनी दूकान पर बुलाना चाहते हैं। इस समय जिस तरह बड़े शहरों में स्टेशन के बाहर इक्के वाले सवारी के लिये चीखते हैं उसी तरह ये दुकानदार चिल्लाते हैं। लेकिन वे अपनी जगह नहीं छोड़ते हैं। कुछ लोग जेवर बनाते भी रहते हैं। सौदा पटाने में बड़ी देर लगती है। जो यहूदी मेरे साथ था उसे अपने मित्र

के लिये एक जेवर लेना था। उसने दस बारह दुकानें छान डाली। दो ढाई घंटे सौदा पटाने में लगाये तब कहीं अन्त में एक छोटा सा जेवर लिया। यही हाल कपड़े के बाज़ार में हुआ। एक नहाने की तौलिया लेने में उसने बीसियों दुकानों पर वही माल देखा। अन्त में उसने एक तौलिया मोल ली। पर दुकानदार लोग सौदा न लेने वाले से नाराज़ नहीं होते हैं।

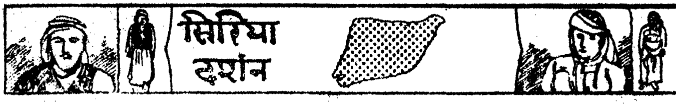
दमश्क शहर में सबसे ज्यादा मशहूर इमारत यहां की मस्जिद है। पवित्रता में मक्का या मदीना की मस्जिदों से यह कम नहीं है। इसके ऊँचे २ खम्भे, कामदार छतें, विशाल कमरे, चौड़े आँगन अपनी शान में दुनिया की दूसरी इमारतों को कुछ भी नहीं समझते। यहाँ के मुल्लाओं में बहुत कट्टरपन भी नहीं है। इसलिये इसके भीतर जाने और इसकी सभी चीजों को देखने में कोई कठिनाई नहीं हुई। कहते हैं पहले यह यूनानी या रोमन मन्दिर था। विजयी मुसलमानों ने इसे कुछ तोड़-फोड़कर मस्जिद में बदल लिया। तीन सदियों तक यह सिटिफ का सबसे बड़ा गिरजाघर रहा। फिर कुछ दिनों तक आधे में गिरजा और आधे में मस्जिद रही। अंत में



खलीफ़ा ने इसाई मूर्ति तोड़ डाली और सब की सब इमारत मस्जिद बना ली। ईसाई बेचारे चिल्लाते ही रह गये। कुस्तुन्तुनिया के १२०० बढ़िया कारीगर एकदम काम पर लगा दिये गये। सुन्दर पत्थरों के लिये सारा सिरिया देश छान डाला गया। लकड़ी की छतों पर बढ़िया सोने का काम हुआ। छत से सोने के ६०० लैम्प लटकने लगे। १०६६ ई० में आग ने और १४०१ ई० में तैमूरलंग ने इसे बरबाद कर दिया। १८६३ ई० में फिर आग से इस मस्जिद को बड़ा नुकसान हुआ फिर भी वर्तमान इमारत बड़ी आलीशान है। यह १६३ गज़ लम्बी १०८ गज़ चौड़ी है। पूर्व और पश्चिम की ओर बड़े बड़े दरवाज़े हैं।

छोटी बरदा नदी दमश्क शहर की जान है। यह एक उथली नहर सी मालूम होती है। इसके दोनों किनारे पक्के बने हैं। इस पर कई पक्के पुल बने हैं। इसी एक बड़ी सड़क के पास एक सिन्धी सज्जन की योरुपीय ढंग की जेवर और दूसरी विचित्र पूर्वी चीजों की दूकान है। इनसे शहर और सिरिया के सम्बन्ध में बड़ी उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई।

शहर का पहाड़ी ढाल ज़ीनेदार घरों से बड़ा सुन्दर मालूम होता है। यदि चोटी पर चढ़कर शहर पर नज़र डाली जाय तो यहां का दृष्य बड़ा सुन्दर मालूम होता है। नहर के दूसरी ओर बैंक सिनेमा और विदेशी राजदूतों के विशाल भवन हैं। इधर ही फौजी बारकें हैं। बारकों में छोटे क़द वाले काले हवशी सिपाही हैं। पीली या खाकी वर्दी और लम्बी लाल टोपी पहने ये लोग बड़े भले मालूम होते हैं। इधर शहर का सर्वोत्तम भाग है। बैंड आदि सुनने और टहलने को लोग अक्सर इधर हो आते हैं। रेलवे स्टेशन भी इधर ही हैं। रेलगाड़ी के छूटने के समय और किराये जानने में बड़ी मुश्किल हुई। इधर के लोग इतनी तेज़ फ्रेंच और अरबी बोलते थे कि समझना मुश्किल हो गया। अंत में एक सज्जन कृषि सुपरिन्टेन्डेन्ट के कमरे में मुझे ले गये वहां उसने मुझे किराये और टाइमटेबिल की छपी हुई सूची दिखलाई जिससे कोई सन्देह न रहा। पर मैंने मोटर के रास्ते को अधिक पसंद किया। दूसरे दिन मैंने अपना पासपोर्ट ब्रिटिश राजदूत को दिखलाया। उसने कहा सब ठीक है। इसलिये शहर के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद



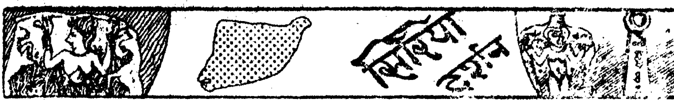
मैंने ५५ (पेलेस्टायन) पियास्टर में यरूशलम के लिये टिकट लिया। दूसरे दिन सवेरे ही मेरे मोटर ने दमश्क से प्रस्थान कर दिया।

२

दूसरे दिन केरो से सिकन्दरिया के लिये प्रस्थान किया। इस ओर सब कहीं बङ्गाल के समान हरा भरा था। रेगिस्तान का नाम नहीं था। सिकन्दरिया शहर बड़ा सुन्दर है। कुछ पार्क और मुहल्ले योरप के समान साफ हैं। ट्रामगाड़ी का किराया भी महँगा नहीं है। बन्दरगाह पर अक्सर भीड़ लगी रहती है। समुद्र-तट पर बेंचें पड़ी रहती हैं। फर्श पक्का है। यहीं शाम को लोग इकट्ठे होते हैं। कुछ लोग तो प्रायः आधी रात तक रहते हैं। यहां की प्राचीन गुफायें और अजायबघर देखने योग्य हैं। पर शहर में योरुप की प्रायः सभी जातियों की खिचड़ी है। यहां से बेरूत और एथेन्स को बराबर जहाज छूटते हैं। पहले मैंने पासपोर्ट पर ग्रीस का विजा कराया। फिर यहाँ से मैंने बेरूत होकर टर्की जाने का निश्चय किया। एक फ्रांसीसी जहाज़ छूटने वाला था। जब बन्दरगाह पर पहुँचा तो जहाज़ के

छूटने में बहुत थोड़ा समय रह गया था। बन्दरगाह पर चुङ्गी, पुलीस और डाक्टरों की रस्म अदा कराने में एक मिस्री कुली ने बड़ी फुर्ती दिखलाई। पर उसने मनमाना खर्च करवाया एक दो जगह तो उसने बिना रसीद के ही खर्च कराया! मैं समझता था कि कुछ मिस्री सिक्के मेरे पास फालतू बच जायेंगे पर हुआ उलटा। सारे मिस्री सिक्के खर्च हो गये। अन्त में सिरिया के कुछ सिक्के जिनका मूल्य लगभग दो तीन रुपये के बराबर था, उस कुली को देकर पीछा छुड़ाया।

जहाज के चलने पर कुछ समय तक तट दिखाई देता रहा। खजूर के पेड़ और मीनारें किसी गाँव या शहर की सूचना देती थीं। पोर्ट सईद का दृश्य भी दिन को ही दिखाई दिया। कुछ समय बाद तट एकदम ओझल हो गया। इस जहाज़ पर साधारण मुसाफिरों के अतिरिक्त सूडानी सिपाही भी सवार थे। इनमें और गोरे फ्रांसीसी सिपाहियों में एकदम समानता का व्यवहार था। दोनों को एक तरह का भोजन भी मिलता था। रात के समय सूडानी सिपाही लगभग १२ बजे रात तक शोर मचाते रहे। वे गोरों के नाच



की नक़ल करते थे। एक मेम और दूसरा साहब बनता था।

इन लोगों की संख्या इतनी अधिक थी कि आटा माड़ने का काम भी मशीन से लिया जाता था। जहाज में और सभी तरह का आराम था। लेकिन मर्दों की टट्टियाँ खुली हुई थीं। इस जहाज के सभी मल्लाह फ्रांसीसी थे। भाषा की कठिनाई होने पर भी वे मुझे प्रसन्न रखने की कोशिश कर रहे थे। दूसरे दिन मुझे इसका भेद मालूम हुआ। मेरी जगह के पास ही मिस्र देश से भेजे हुए खरबूजों के बड़े बड़े गड्डे बँधे हुए रक्खे थे। ये लोग समझ बैठे कि इनका मालिक मैं ही हूँ। जब इन लोगों ने खरबूजे माँगे और मैं उन्हें छोड़ कर चलने लगा तो उन्हें निराश होना पड़ा! कुछ लाल मिट्टी वाला देवदारु के पेड़ों से ढका हुआ बेरूत का बन्दरगाह बड़ा सुहावना लगता है। पर जहाज से तट पर उतरने में बड़ी कठिनाई हुई। तट पर शायद पानी गहरा न था। जहाज को कुछ दूर ठहरना पड़ा। छोटी-छोटी नावों की भीड़ जहाज के पास आ डटी। अरबी ठीक ठीक न जानने के कारण इनसे किराया तय करना

कठिन था। पर सौभाग्य या दुर्भाग्य से जहाज़ पर एक नई मोटर कम्पनी के एजेण्ट आ गये थे। ये समझे कि मैं बेरूत से बग़दाद जाऊँगा इसी से इन्होंने मुझे अपना एक किरायेदार समझ कर मेरा सामान उतरवाने और नाव तय करने में बड़ी मदद दी। सामान सब चुङ्गीघर में रक्खा गया। प्रायः सभी पराधीन देशों की पुलिस शक करनेवाली होती है। जब तक वह लोगों पर मनमानी न कर ले तब तक उसका कर्तव्य पूरा नहीं होता है। यही हाल यहाँ था। जो मुसाफिर अच्छी तरह अरबी और फ्राँसीसी नहीं बोल सकते थे वे ऊपर वाले कमरे में बिठाये गये। जब सब जहाज़ खाली हो गया उसके आध घंटे बाद सिरिया-निवासी एक पुलिस का अफसर आया। उसने बारी बारी से दुभाषिये के द्वारा सब से पूछा। बेरूत में तुम्हारा कौन है? कहाँ ठहरोगे? किसलिये आये हो? इस अवसर पर भी मोटर एजेण्ट ने बड़ी मदद दी। पुलिसवाले उसकी जान पहचान वाले मालूम पड़ते थे। उनके फंदे से छुड़ाकर वह मुझे एक होटल में ले आया। होटल में भाषा की कठिनाई और भी अधिक खटकती

थी। एक बार मैंने नहाने के लिये केवल ठंडा पानी तैयार रखने के लिये कहा। होटल वाले ने गरम पानी रखवाया और बिल में गरम पानी के लगभग आठ आने और अधिक जोड़ लिये।

शाम के समय टामस कुक के दफ़्तर में अपनी डाक का पता लगाया। वहीं मैंने चेक भुनाई। ऊँची नीची सड़कों पर घूमने के बाद मोटर एजेण्ट से बातचीत हुई। वह चाहता था कि बेरूत से बग़दाद का टिकट मैं पहले ही से उसके ज़रिये से ख़रीद लूँ। मैंने उसे समझाया कि सारे योरुप की सैर करनी है। न जाने किस रास्ते लौटना पड़े, टिकट के बन्धन में कैसे पड़ूँ। मैंने उसकी सेवा के लिये उसे कुछ देने की भी बात कही। अन्त में उसे सिरिया के तीन चार पौंड दे कर उससे छुट्टी ली।

बेरूत और समीप के स्थानों को देख कर मैंने बालबक और हाम्स होकर अलप्पो के लिये प्रस्थान किया। इस मार्ग में कहीं हरे भरे नखलिस्तान और पहाड़ हैं। कहीं उजाड़ रेगिस्तान हैं पर अलप्पो नगर

बहुत सुन्दर है। इसकी चारदीवारी पुरानी है। बीच में किला है। सड़कों पर गधे, ऊँट, खच्चर, घोड़ागाड़ियों और मोटरों की भीड़ लगी रहती है। यहीं बग़दाद से आनेवाली लाइन तुर्की और सिरिया की रेलवे लाइनों से मिलती है। यहाँ कई प्राकृतिक मार्गों का संगम सदा से रहा है।

